सर्वहारा दृष्टिकोण

सोशलिस्ट यूनिटी सेन्टर ऑफ इण्डिया (कम्युनिस्ट) का मुखपत्र (पाक्षिक)

वर्ष-32 अंक 19-20 (संयुक्त) 22 अक्तूबर से 5 नवम्बर, 2017 मुख्य संपादक : कॉमरेड प्रभास घोष कुल पृष्ठ 8 मूल्य : 2 रुपये

बीएचयू छात्राओं पर हुए लाठीचार्ज की एआईडीएसओ ने की कड़ी निन्दा

कोलकाता (प.बं.) : 24 सितम्बर 2017 को प्रेस को जारी बयान में छात्र संगठन आल इंडिया डीएसओ के महासचिव कॉ. अशोक मिश्रा ने कहा : वाराणसी में बीएचयू की छात्रा के साथ छेड़छाड़ और विश्वविद्यालय प्रशासन की शर्मनाक प्रतिक्रिया के खिलाफ विरोध प्रदर्शन कर रहे छात्र-छात्राओं पर क्रूर लाठीचार्ज की एआईडीएसओ कड़ी निंदा करता है।

उन्होंने कहा कि गुरुवार शाम 6 बजे, त्रिवेणी छात्रावास के पास, बीएचयू प्रथम वर्ष की छात्रा के साथ तीन बाइक सवार लोगो ने छेड़छाड़ की। डरी व सहमी छात्रा जब शिकायत दर्ज कराने के लिए प्रॉक्टर कार्यालय पहुंची, तो उन्होंने शिकायत को गंभीरता और संवेदना के साथ लेने के बजाय, लड़कियों को शाम को अकेले बाहर निकलने के लिए दोषी ठहराया।

प्रशासन के इस असंवेदनशील रवैये से निराश हुए छात्रों ने न्याय और सुरक्षा की मांग को लेकर विरोध प्रदर्शन करने का फैसला किया। शांतिपूर्वक प्रदर्शन कर रहे छात्र-छात्राओं पर पुलिस ने लाठीचार्ज किया। छात्र नेता ने कहा कि छात्राओं पर पुरुष पुलिस के द्वारा हमला घोर निंदनीय व अपराध है।

एआईडीएसओ ने इस घटना पर विश्वविद्यालय प्रशासन की भूमिका व योगी व मोदी सरकार की चुप्पी को भी घोर निंदनीय बताया और इस काण्ड के खिलाफ 25 को सितम्बर को देशव्यापी विरोध दिवस मनाने का आह्वान किया। संगठन ने इस घटना की निष्पक्ष जांच और बीएचयू प्रशासन व पुलिस के दोषी अधिकारियों के खिलाफ तुरंत कार्रवाई की मांग की। एआईडीएसओ ने विश्वविद्यालय परिसर में महिलाओं की सुरक्षा व बचाव सुनिश्चित करने के शीघ्र करवाई की भी मांग की।

कार्ल मार्क्स
— महान दार्शनिक एवं विश्व कम्युनिस्ट आन्दोलन के पथ प्रदर्शक

(गतांक से आगे)

मार्क्स ने खोजे थे
सामाजिक बदलाव के अन्तर्निहित नियम

मानव इतिहास में विभिन्न सामाजिक बदलाव कैसे हुए यह विश्लेषण करने में विज्ञान का इस्तेमाल करते हुए सामाजिक परिवर्तन के अन्तर्निहित नियमों को खोजना मार्क्स का एक और योगदान रहा है। पहले यह विश्वास कराया जाता था कि इतिहास का मतलब है राजाओं या बादशाहों की कहानी का वर्णन और सामाजिक बदलाव उन्हीं शक्तिशाली लोगों के हाथों किये गये थे। उस समय कोई स्पष्ट धारणा नहीं थी कि क्यों एक सामाजिक व्यवस्था दूसरी सामाजिक व्यवस्था में तब्दील हो जाती है। क्या इस प्रकार के परिवर्तन भाग्य के अनुसार पहले से तय होते थे या क्या किसी कार्य-कारण के नियम से नियंत्रित हुए बिना ही ये हो रहे थे? इन प्रश्नों को जवाब तब तक नहीं था क्योंकि इन सामाजिक परिवर्तनों की वैज्ञानिक व्याख्या तब तक नहीं थी। कोई ठोस वैज्ञानिक सिद्धांत इस संदर्भ में नहीं खोजा गया था। मार्क्स ने सर्वप्रथम सामाजिक जीवन, समाज तथा इतिहास का अध्ययन करने के लिए द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद के सिद्धान्त को लागू किया ताकि संपूर्ण मानव इतिहास को नियंत्रित करने वाले प्राकृतिक नियमों को ढूँढ़ लिया जाए। उन्होंने व्याख्या करके बताया कि भौतिक जगत में परिवर्तन जैसे एक निश्चित नियम द्वारा नियंत्रित प्रक्रिया से हो रहे हैं और उन नियमों को वैज्ञानिक अध्ययन के जरिए खोजा और जाना जा सकता है, वैसे ही मानव समाज का विकास भी निश्चित नियमों से नियंत्रित होता है। मनुष्य जिस तरह विज्ञान के इस्तेमाल के जरिए प्राकृतिक नियमों को जान सकता है, फिर प्रकृति को अपने फायदे में इस्तेमाल करता है और जीवन के विकास को गति प्रदान करता है, उसी तरह वह मानव इतिहास तथा समाज के परिवर्तनों को नियंत्रित करने वाले नियमों को भी जान सकता है और फिर उन नियमों के अनुसार क्रिया कर समाज को बदलने में सचेत भूमिका अदा कर सकता है। मार्क्स ने कहा कि प्रकृति के साथ मनुष्य का संघर्ष अस्तित्व का संघर्ष है। जिन्दा रहने के लिए मनुष्य को भोजन की जरूरत है। यह भोजन प्रकृति से उत्पादन कर प्राप्त किया जाता है। दूसरे शब्दों में मनुष्य को जीने के लिए भोजन, कपड़ा व मकान की जरूरत है। उसे जंगली जानवरों से लड़ने के लिए हथियारों की भी जरूरत है। इसलिए उसे प्रकृति से सब कुछ का उत्पादन करना होता है। इस प्रकार मनुष्य प्रकृति पर

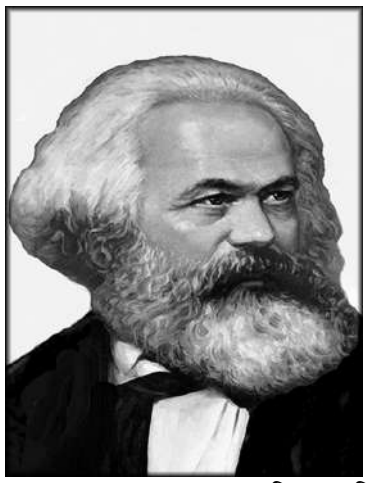

(शेष पृष्ठ 4 पर)

महान नवम्बर क्रान्ति शताब्दी वर्ष पर जगह-जगह समारोह आयोजित

'क्रांति मार्च' निकाला

जमशेदपुर (झारखण्ड) : रूसी समाजवादी क्रांति शताब्दी वर्ष समारोह के अवसर पर 22 सितम्बर को एसयूसीआई(कम्युनिस्ट), कोल्हान प्रमंडल की ओर से यहां 'क्रांति मार्च' निकाला गया। इस भव्य जुलूस में बड़ी संख्या में मजदूर, किसान, छात्र व महिलाएं शामिल हुए। बिष्टुपुर पोस्ट ऑफिस से यह जुलूस वोल्टास बिल्डिंग तक आकर समाप्त हो गया। इसके बाद श्रीकृष्ण सिन्हा संस्थान में 'मेहनतकश जनता की मुक्ति व रूसी समाजवादी क्रांति का शताब्दी वर्ष'' विषय पर एक परिचर्चा आयोजित की गई। इसमें सीपीआई, सीपीआई(एम), भाकपा(माले), सीपीआई एमएल आदि वामपंथी पार्टियों के नेताओं, शिक्षाविदों, बुद्धिजीवियों ने भी अपने विचार रखे। मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित रहे क्रान्तिकारी पार्टी एसयूसीआई (सी) के बिहार राज्य सचिव कॉ. अरुण कुमार सिंह।

उन्होंने कहा कि आज पूरा देश गंभीर संकट के दौर से गुजर रहा है। कई तरह के सब्जबाग दिखाकर मोदी सरकार बनी थी। लेकिन आज इस सरकार के बनने के 3 साल बाद देश की जनता यह महसूस कर रही है कि वे ठगे गये हैं, 'अच्छे दिन' दूर-दूर तक कहीं नहीं दिखाई दे रहे हैं। अब तो भाजपा अध्यक्ष श्री अमित शाह ने भी

जमशेदपुर : 'क्रान्ति मार्च' में कूच करते हुए एसयूसीआई(कम्युनिस्ट) कार्यकर्ता

कह दिया है कि सन 2022 के पहले अच्छे दिन नहीं आयेंगे। पर हां, इस देश के पूंजीपतियों, कॉर्पोरेट हाउसों और अरबपतियों के लिए जरूर अच्छे दिन आ गये हैं। हर तरह से देश की आम जनता महंगाई, गरीबी, बेरोजगारी, विस्थापन का दंश झेलने के अभिशप्त है। इस स्थिति में आम जनता में एक ही विचार काम कर रहा है कि आगामी चुनाव में इस जनविरोधी भाजपा सरकार को शिकस्त देना है। यह तो अवश्य करना होगा, परंतु जरा सोचकर देखें, आजादी के बाद से अब तक यही होता आया है। एक पार्टी की सरकार बनती है, वह सरकार पूंजीपतियों

(शेष पृष्ठ 7 पर)

'लोकतंत्र के लिए मार्च' आयोजित

दिल्ली : सभा को संबांधित करते हुए कॉ. प्राण शर्मा

नई दिल्ली : गौरी लंकेस की हत्या के एक महीने के समापन पर 5 अक्टूबर को यहां मंडी हाउस से जंतर मंतर तक, वाम दलों के जनसंगठनों द्वारा एक संयुक्त विरोध प्रदर्शन 'लोकतंत्र के लिए मार्च' आयोजित किया गया। इसमें दिल्लीं, कर्नाटक और अन्य राज्यों के प्रगतिशील और धर्मनिरपेक्ष दिमाग वाले लोगों एवं प्रमुख नागरिकों

(शेष पृष्ठ 6 पर)

शहीद भगत सिंह की 110वीं जयन्ती के अवसर पर स्मृति-सभाएं आयोजित

आजादी आन्दोलन की गैर-समझौतावादी धारा के महान क्रांतिकारी शहीद-ए-आज़म भगत सिंह की 110वीं जयन्ती के अवसर पर देश भर में विभिन्न कार्यक्रम हुए। छात्र-नौजवानों, महिलाओं, किसान-मजदूरों ने महान क्रान्तिकारी शहीद भगत सिंह को याद किया और शोषणहीन समाज कायम करने के उनके अधूरे सपने को पूरा करने का संकल्प लिया।

लखनऊ (उ.प्र.) : शहीद-ए-आज़म भगत सिंह की 110 वीं जयन्ती की पूर्व बेला पर छात्र संगठन ऑल इण्डिया डीएसओ ने 27 सितम्बर को यहां स्थानीय डीएवी इण्टर कॉलेज के प्रांगण में जयन्ती कार्यक्रम आयोजित किया। कार्यक्रम के शुरू में भगत सिंह की तस्वीर युक्त बैज उपस्थित छात्रों एवं टीचर स्टाफ को पहनाये गए। तत्पश्चात् उपस्थित शिक्षक समुदाय, संगठन के कार्यकर्ताओं व छात्रों द्वारा भगत सिंह के चित्र पर फूल चढ़ाकर नमन किया गया।

कार्यक्रम में उपस्थित छात्रों को सम्बोधित करते हुए संगठन के प्रदेश सचिव हरीशंकर मौर्य ने भगत सिंह के जीवन संघर्षों पर चर्चा करते हुए कहा कि देश की आजादी के लिए हँसते हुए फाँसी को गले लगाने वाले क्रांतिकारियों को आज भुलाया जा रहा है। सबके लिए शिक्षा, जनवादी, धर्मनिरपेक्ष व वैज्ञानिक शिक्षा तथा हर तरह के अन्याय, शोषण- जुल्म से मुक्त समाज निर्माण के शहीदों के सपने को आज पैरों तले रौंदा जा रहा है। शिक्षा को महज व्यवसाय आधारित और व्यापार की वस्तु में तब्दील किया जा रहा है। पाठ्य पुस्तकों से क्रांतिकारियों, साहित्यकारों व महापुरुषों की जीवनियों को हटाया जा रहा है। शिक्षा एवं संस्कृति के गिरते स्तर को बचाने के लिए भगत सिंह जैसे क्रांतिकारियों को आज के छात्र-नौजवानों को अपने जीवन का आदर्श बनाना ही होगा। कार्यक्रम में संगठन के आशुकांति सिन्हा ने 'सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है' की धुन बाँसुरी पर प्रस्तुत की।

अंत में बच्चों को सम्बोधित करते हुए डीएवी इण्टर कॉलेज के प्रधानाचार्य श्री नरेन्द्र देव ने छात्र-नौजवानों को शहीद-ए-आज़म भगत सिंह के जीवन-संघर्ष को आदर्श मानते हुए अपने चरित्र का गठन करने का आह्वान किया। कार्यक्रम का संचालन संगठन के लखनऊ जिला इंचार्ज यादवेन्द्र ने किया। इसके अलावा जाने-माने समाजसेवी के.के. शुक्ला, जय प्रकाश, वीरेन्द्र त्रिपाठी, हरकिशन, शैलेश, सचिन व विप्लव आदि लोगों ने भी शहीद-ए-आज़म भगतसिंह को नमन किया।

कैथल (हरियाणा) : 28 सितम्बर को एआईडीवाईओ की कैथल जिला कमेटी द्वारा शहीद भगत सिंह जयन्ती पर जवाहर पार्क में सभा की गई। इसकी अध्यक्षता कमल कुमार ने की और संचालन संगठन के जिला सचिव कॉ. नरेश कुमार ने किया। जनसभा से पहले रेलवे स्टेशन प्रांगण से सभा स्थल तक जुलूस निकाला गया जिसमें काफी नौजवानों ने हिस्सा लिया। भगत सिंह चौक पर स्थापित शहीद-ए-आज़म की आदमकद मूर्ति पर माल्यार्पण किया गया।

जनसभा को किसान नेता कॉ. बाबूराम ने सम्बोधित किया। उन्होंने भगत सिंह के लेख 'मैं नास्तिक क्यों' का हवाला देते हुए देश के किसान-मजदूरों, दस्तकारों सहित तमाम मेहनतकशों को भाग्यवाद, पूर्वजन्म, भाववाद, अंधविश्वास से मुक्त होने, वैज्ञानिक चिंतन, मार्क्सवाद अपनाने और मानव द्वारा मानव के शोषण को खत्म कर इसी धरती पर स्वर्ग बनाने अर्थात् एक खुशहाल समाजवादी समाज व्यवस्था कायम करने के लिए आगे आने का आह्वान किया। शहीद भगत सिंह का यही सपना था जो आज भी अधूरा है।

भिवानी (हरियाणा) : 28 सितम्बर को आजादी आन्दोलन की समझौताहीन धारा के महान् क्रान्तिकारी शहीद भगत सिंह की 110वीं जयन्ती के अवसर पर युवा संगठन एआईडीवाईओ, अखिल भारतीय महिला सांस्कृतिक संगठन और भवन निर्माण कारीगर मजदूर यूनियन हरियाणा सम्बन्धित एआईयूटीयूसी की तरफ से स्थानीय नेहरू पार्क भिवानी में स्मृति सभा का आयोजन किया गया। सभा की अध्यक्षता एआईडीवाईओ के जिला सचिव सन्दीप मेहरा ने की। मुख्य वक्ता एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) के राज्य कमेटी सदस्य कॉ. रामफल रहे। सभा का संचालन भवन निर्माण कारीगर मजदूर यूनियन हरियाणा के जिला सचिव कॉ. धर्मवीर सिंह ने किया।

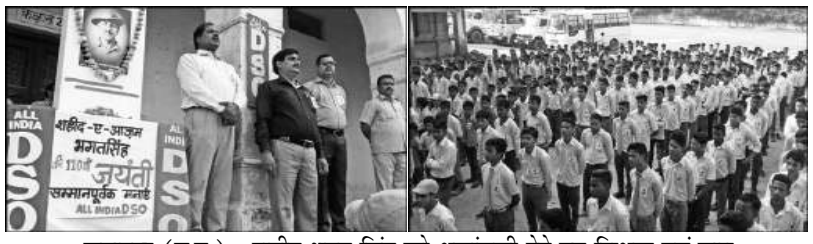

लखनऊ (उ.प्र.) : शहीद भगत सिंह को श्रद्धांजली देते हुए शिक्षक एवं छात्र

शहीद भगत सिंह के जीवन-संघर्ष और क्रान्तिकारी चरित्र पर प्रकाश डालते हुए कॉ. रामफल ने बताया कि भगत सिंह अदम्य साहस, देशभक्ति, कर्तव्यपरायणता, कुर्बानी और धर्मनिरपेक्षता की अनुकरणीय मिसाल पेश कर गये थे। वे छोटी सी उम्र में ही गहरे ज्ञान के अधिकारी बने, तत्कालीन हालात का सही मूल्यांकन पेश किया, विदेशी हुकूमत के जुए से मुक्ति की सही राह दिखाई और हर तरह के शोषण और अन्याय-अत्याचार के खिलाफ संघर्ष चलाते हुए जवानी के प्रतीक बन कर उभरे थे। उनके प्रति अपने दिल में गहरे आदर भाव के साथ देशवासियों ने उन्हें शहीद-ए-आजम के विशेषण से नवाजा था। आज भी छात्र-नौजवानों और आम लोगों के वे प्रेरणा स्रोत हैं। वे न केवल ब्रिटिश साम्राज्यवाद की गुलामी की जंजीरों से देश को आजाद कराना चाहते थे, बल्कि एक ऐसा समाज बनाना चाहते थे जिसमें इन्सान को अपनी बुनियादी आवश्यकताओं के लिए तरसना न पड़े और मानव द्वारा मानव का शोषण न हो। भगत सिंह जैसे क्रान्तिकारियों की याद को शासक वर्ग जनमानस से भुला देना चाहता है ताकि उनके जीवन-संघर्ष से प्रेरित होकर और सीख लेकर कोई इस शोषण-जुल्म का विरोध न कर सके। उन्होंने भगत सिंह सरीखे आजादी आन्दोलन की समझौताहीन क्रान्तिकारी धारा के शहीदों और पुनर्जागरणकाल के मनीषियों की याद को तरोताजा करने की जरूरत पर बल दिया।

एआईडीवाईओ के जिला सचिव कॉ. सन्दीप मेहरा ने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि 15 अगस्त, 1947 को समझौते से आजादी तो मिली परन्तु अंग्रेज साम्राज्यवादियों की जगह भारतीय पूंजीपति राजसत्ता पर काबिज हो गए। इस तरह शासक-शोषक ही बदले और शोषण-जुल्म बदस्तूर जारी है। हर तरह के शोषण से मुक्ति का शहीद भगत सिंह का सपना आज भी अधूरा है। आजादी के इन 70 सालों के दौरान अमीर और अमीर होते गये तथा गरीब और भी गरीब। महंगाई, बेरोजगारी, गरीबी, भुखमरी, तंगहाली बढ़ती जा रही है। पढ़ाई-लिखाई और इलाज महंगा होने से आम आदमी की पहुँच से बाहर होता जा रहा है। प्रचार माध्यमों से अश्लीलता, यौनता व हिंसा परोसी जा रही है। शराबखोरी, नशाखोरी, जुए की लत को बढ़ावा दिया जा रहा है। इस तरह लोगों को, खासकर छात्र-नौजवानों को सांस्कृतिक-नैतिक पतन की दलदल में धकेला जा रहा है। नतीजतन, गुरुग्राम, पानीपत आदि में स्कूली छात्र-छात्राओं के साथ दुष्कर्म हो रहे हैं। महिलाओं पर अपराध, बलात्कार, अत्याचार बढ़ रहे हैं। रोजगार के लिए युवा दर-दर भटक रहे हैं। नोटबंदी और जीएसटी ने लाखों रोजगार खत्म कर दिये हैं। राजनीति के नाम पर चल रहा है भ्रष्टाचार और मौकापरस्ती। देशसेवा की आड़ में की जा रही है पूँजीपतियों की स्वार्थपूर्ति। किसान कर्ज से आत्महत्या कर रहे हैं। किसानों पर लाठी-गोली चलाई जा रही हैं। जातिवाद, साम्प्रदायिकता व क्षेत्रवाद को बढ़ावा देकर मेहनतकश जनता में फूट डाली जा रही है। हाल ही में बीएचयू में छेड़छाड़ के अपराधियों पर कार्रवाही करने के बजाय पुलिस द्वारा शान्तिपूर्वक धरना दे रही छात्राओं पर लाठियां चलाये जाने की उन्होंने कड़ी निन्दा की और दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करने की मांग की।

भिवानी: शहीद भगत सिंह स्मृति सभा को सम्बोधित करते हुए कॉ. रामफल

सभा को एआईएमएसएस की तरफ से रफीकन ने भी सम्बोधित किया।

गुरुग्राम (हरियाणा) : भवन निर्माण कारीगर मजदूर यूनियन हरियाणा रजि. नं. 1845 सम्बन्धित एआईयूटीयूसी की तरफ से ब्लाक सम्मेलन 28 सितम्बर भगतसिंह जयंती पर सम्पन्न हुआ जिसका संचालन कॉमरेड रामकुमार, जिला सचिव एआईयूटीयूसी ने किया। अध्यक्षता कॉमरेड श्रवण कुमार ने की। सम्मेलन मे

ओमप्रकाश पासवान को गुरुग्राम ब्लाक अध्यक्ष, कोमल को उपाध्यक्ष, हेमराज को सचिव, राजेंद्र को सहसचिव, वजीरसिह को संयुक्त सचिव, जयसिंह को कैशियर, टेकचंद वर्मा को प्रचार सचिव चुना गया। सम्मेलन मे भगत सिंह के चित्र पुष्प अर्पित किए गए और उनके शोषणविहीन समाज बनाने के सपने को पूरा करने का आह्वान किया गया। मजदूर-विरोधी नीतियों के खिलाफ संघर्ष करने और अपनी यूनियन को मजबूत करने का फैसला लिया गया।

गुना (म.प्र.) में कैण्डल मार्च : 24 सितम्बर को छात्र संगठन ऑल इंडिया डीएसओ ने शहीद भगत सिंह की याद में यहां हनुमान चौराहे से भगत सिंह चौक तक कैण्डल मार्च निकाला। वहां हुई सभा को संगठन के जिला सचिव मंजीत सिंह पंवार ने संबोधित किया। संगठन की कॉलेज अध्यक्ष सोनम शर्मा ने बीएचयू की छात्राओं पर किये गए बर्बर लाठीचार्ज की निंदा की। कार्यक्रम में ट्रेड यूनियन नेता नरेन्द्र भदौरिया, समाजसेवी पुष्पपराग व अन्य कई वक्ताओं ने अपने विचार रखे।

किसानों की ज्वलंत समस्याओं के समाधान के लिए उठी आवाज

जौनपुर (उत्तर प्रदेश) : जंगली सूअरों, नीलगायों, आवारा पशुओं-बछड़ों के बढ़ते आतंक से बर्बाद हो रही किसानों की फसलों की रक्षा की मांग पर और खाद, बीज, बिजली, कीटनाशक दवाओं, डीजल-पेट्रोल के दाम कम करने व सभी सूखी नहरों में पानी छोड़ने इत्यादि मांगों को लेकर ऑल इंडिया किसान खेत मजदूर संगठन (एआईकेकेएमएस) के बैनर तले सैकड़ों किसान-खेतमजदूरों ने 19 सितंबर को तहसील मुख्यालय बदलापुर में धरना-प्रदर्शन किया। इसके पहले बदलापुर नगर स्थित सब्जी मंडी से जुलूस निकाला गया जो नगर का भ्रमण करते हुए इंदिरा चौक होते हुए तहसील मुख्यालय पहुंचा और धरना-प्रदर्शन में तब्दील हो गया। मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश को संबोधित किसानों की ज्वलंत समस्याओं से संबंधित मांग पत्रक तहसीलदार बदलापुर को सौंपा गया।

जंगली सूअरों, नीलगायों आदि आवारा पशुओं से नष्ट हो रही फसलों की सुरक्षा की मांग पर मौजूद तहसीलदार व वन विभाग के अधिकारियों को घेरकर किसानों ने लंबी वार्ता की और चेतावनी दी कि एक हफ्ते के अंदर ठोस कार्यवाही नहीं की गई तो यह आंदोलन तेज किया जाएगा। सभी शर्तें स्वीकारने और आश्वासन के बाद अधिकारियों को मुक्त किया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कॉमरेड श्रीपति सिंह ने की व संचालन कॉमरेड इंदु कुमार शुक्ला ने किया। कॉमरेड जय नारायण मौर्य, प्रवीण कुमार शुक्ला, अशोक कुमार खरवार, प्रमोद कुमार शुक्ला, राजेंद्र प्रसाद तिवारी, जयप्रकाश पाण्डेय, कृष्णा सिंह, सुखराज सरोज व एसयूसीआई (सी) जौनपुर के जिला सचिव कॉ. रविशंकर मौर्य आदि ने सभों को संबोधित किया।

किसानों की ज्वलंत मांगों को लेकर किसान संगठनों की किसान मुक्ति यात्रा

चम्पारण (बिहार) : ए.आई.के.के.एम.एस. अखिल भारतीय समिति के सदस्य कॉमरेड बेचन अली ने किसान मुक्ति यात्रा के अवसर पर यहां आयोजित जनसभा को संबोधित किया। किसान संगठनो द्वारा संयुक्त रूप से देश भर में की जा रही किसान मुक्ति यात्रा का तीसरा चरण चंपारण, बिहार से 2 अक्तूबर से शुरू हुआ, जिसमें किसानों और कृषि कार्यकर्ताओं के नवगठित मंच, अखिल भारतीय किसान संघर्ष समन्वय समिति (एआईकेएससीसी) के संयोजक सरदार वीएम सिंह और अन्य कई राष्ट्रीय नेताओं में वक्ताओं के बीच थे। मोतीहारी में, एआईकेकेएमएस के उपाध्यक्ष कॉमरेड अशोक कुमार सिंह ने भी बड़े पैमाने पर उपस्थित किसानों को संबोधित किया।

चम्पारन (बिहार) : किसान मुक्ति यात्रा के दौरान सभा को सम्बोधित करते हुए कॉमरेड बेचन अली (ऊपर) सभा का एक दृश्य (नीचे)

महान नवम्बर क्रान्ति शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में किसानों की विचार गोष्ठी आयोजित

हिसार (हरियाणा) : 2 अक्तूबर को यहां स्थानीय कुम्हार धर्मशाला में 'किसान-खेतमजदूरों की मुक्ति का सवाल और सोवियत समाजवादी क्रान्ति' विषय पर एक विचार गोष्ठी आयोजित की गई। इसकी अध्यक्षता ऑल इण्डिया किसान खेत मजदूर संगठन के कॉ. नन्दलाल कंवारी ने की। संचालन कॉ. हवासिंह संघर्ष ने किया। संगठन के प्रदेश उपाध्यक्ष कॉ. विजय कुमार ने विचार गोष्ठी का घोषणापत्र पेश किया।

विचार गोष्ठी को सम्बोधित करते हुए किसान खेतमजदूर संगठन के अखिल भारतीय उपाध्यक्ष कॉ. अनूप सिंह मातनहेल ने बताया कि देश की कृषि-व्यवस्था में बड़ी पूंजी की घुसपैठ हो चुकी है। कृषि यंत्रों और अन्य कृषि उपयोगी सामानों के अलावा कृषि बाजार पर इन पूंजीपतियों का ही नियंत्रण है। वे इससे भारी मुनाफा लूटकर किसानों को कंगाल और कर्जवान बना रहे हैं। इनकी दुर्दशा का कोई अंत नहीं है। मौजूदा शोषणमूलक व्यवस्था में गरीब किसानों के पास खेती करने के लिए नकदी नहीं है। सोसाइटियों और बैंकों से लिए गए कर्ज को चुकाने में वे असमर्थ हैं। आखिर उन्हें जमीन से हाथ धोना पड़ रहा है। बेजमीन होकर वे मजदूर बनते जा रहे हैं या बेरोजगारों की विशाल कतार में खड़े हैं। यहां तक कि मध्यम दर्जे के किसान भी दम तोड़ रहे हैं। केवल बड़ी जोत के थोड़े से धनी किसान हैं, जो मौजूदा पूंजीवादी व्यवस्था से लाभ उठाने में सफल हुए हैं। कॉ. अनूप सिंह ने कहा कि कृषि में पूंजी की घुसपैठ के खिलाफ संघर्ष करना ही आज प्रमुख मुद्दा है। उन्होंने कहा कि एकमात्र किसान आन्दोलन के बल पर ही कृषि यंत्र, खाद, बीज, डीजल, कीटनाशक आदि सस्ते कराने, समस्त कर्जे माफ कराने और कृषि उपज के लाभकारी दाम पाने, रोजगार और न्यायसंगत मजदूरी पाने आदि की मांगें हासिल की जा सकती हैं। जो किसान संगठन कृषि में अभी भी सामन्तवाद या अर्ध-सामन्तवाद की बातें करते हैं, वे पूंजीपतियों के हितैषी हैं और ग्रामीण अमीरों के पिट्ठू हैं।

हिसार (हरियाणा) : किसानों की विचार गोष्ठी को सम्बोधित करते हुए कॉमरेड अनूप सिंह मातनहेल

विचार गोष्ठी में सर्वसम्मति से एक स्वर में किसान आन्दोलन को पूंजीवाद-विरोधी दिशा में सशक्त बनाने का आह्वान किया गया। जिला के कई गांवों से आये किसान-खेतमजदूरों ने विचार गोष्ठी में अपनी बात रखी। सभी ने रूस की महान नवम्बर क्रान्ति से सीख लेने पर जोर दिया।

छात्रों पर दर्ज मुकदमे वापिस लेने व विवि में प्रवेश पर लगा प्रतिबंध हटाये जाने के फैसले का स्वागत

रोहतक (हरियाणा) : 19 सितम्बर को प्रैस को एक बयान जारी कर ऑल इण्डिया डेमोक्रेटिक स्टूडेंट्स आर्गेनाईजेशन के प्रदेश सचिव हरीश कुमार सैनी ने प्रदीप देशवाल व अन्य छात्रों पर दर्ज मुकद्दमे वापिस लेने व यूनिवर्सिटी प्रवेश पर लगे प्रतिबंध को हटाये जाने के फैसले का स्वागत किया है व इसे संयुक्त छात्र आन्दोलन की जीत बताया है। सर्वविदित है कि 11 सितम्बर को छात्रों ने विश्वविद्यालय के सभागार में प्रधान मंत्री के लाइव भाषण के जबरन प्रसारण का विरोध किया था। जिसके कारण विरोध करने वाले छात्रों के खिलाफ एफआईआर दर्ज करवायी गयी थी और यूनिवर्सिटी प्रवेश पर प्रतिबंध लगा दिया गया था। इसलिए यह विश्वविद्यालय की स्वायत्तता और विद्यार्थियों के लोकतांत्रिक अधिकारों पर हमला है। छात्र अपने शिक्षकों से शिक्षा लेने के लिए विश्वविद्यालयों और कॉलेजों में आते हैं, न कि राजनीतिक नेताओं और मंत्रियों के भाषण सुनने। यूनिवर्सिटी ऑथोरिटी को किसी भी सरकार या राजनीतिक दल का प्रसारण करने से बचना चाहिए और सरकार के खास एजेंडे के प्रचार के लिए यूजीसी का इस्तेमाल बिल्कुल नहीं होना चाहिए। हम वी.सी., प्रोफेसरों और प्रशासन के अन्य सदस्यों को बधाई देते हैं जिन्होंने छात्रों पर लगे प्रतिबंध को वापस लेने का सही निर्णय लिया है। प्रदर्शनकारियों के साथ एकजुटता व्यक्त करने के लिए आगे आए विद्यार्थी और छात्र संगठनों को हम बधाई देते हैं।

महान नवंबर क्रांति शताब्दी वर्ष के अवसर पर सेमिनार आयोजित

भोपाल (म.प्र.) : 10 अक्टूबर को छात्र संगठन ऑल इंडिया डीएसओ द्वारा महान रूसी नवंबर क्रांति को लेकर एक सेमिनार आयोजित किया गया, जिसकी अध्यक्षता संगठन के म.प्र. राज्य अध्यक्ष मुदित भटनागर ने की। सेमिनार के मुख्य वक्ता ऑल इंडिया डीएसओ के अखिल भारतीय महासचिव कॉ. अशोक मिश्रा ने कहा कि हम सभी ने कभी न कभी, कहीं न कहीं यह जरूर सुना है कि अमीरी-गरीबी, ऊंच-नीच का फर्क तो समाज में सदियों से कायम है और रहेगा, इसे खत्म नहीं किया जा सकता; सब को सब कुछ नहीं मिल सकता, लेकिन रूस की महान नवंबर क्रांति ने इस धारणा को बदल दिया था। रूसी क्रांति से पहले जिस महंगाई, बेरोजगारी, अश्लीलता, नशाखोरी से लोग पीड़ित थे, जिस रूस को उस समय यूरोप का कोढ़ कहा जाता था, क्रांति के बाद इन सारी समस्याओं को रूस में कुछ ही वर्षों में पूरी तरह खत्म कर दिया गया। आज हमारा देश भी इन समस्याओं से ग्रसित है। आम जनता का शोषण तीव्र हो रहा है।

उन्होंने कहा कि इन समस्याओं को खत्म करने के लिए भारत में पूंजीवाद-विरोधी समाजवादी क्रांति ही एकमात्र रास्ता है जो देश को इन सारी समस्याओं से मुक्ति दिला सकता है। इसलिए हमें नवंबर क्रांति की सीखों को लागू करते हुए देश भर में आन्दोलन गठित करने की आवश्यकता है।

कार्ल मार्क्स

(पृष्ठ 1 का शेष)

क्रिया कर रहा है और प्रकृति से उत्पादन कर रहा है। मानव अस्तित्व के लिए जरूरी जीवन के साधनों को अर्जित करने के तरीके को ही भौतिक मूल्यों की वस्तुओं-मालों के उत्पादन का तरीका कहा जाता है। उत्पादन के दौरान प्रत्येक मनुष्य दूसरे मनुष्य से संबंध स्थापित करता है क्योंकि वह अकेले-अकेले उत्पादन नहीं कर सकता है। मनुष्य पारस्परिक सहयोग एवं संबंध के आधार पर उत्पादन करता है। इसलिए कोई भी सामाजिक व्यवस्था एक खास उत्पादन व्यवस्था तथा उत्पादन संबंध की सूचक होती है। जैसा कि हम कह चुके हैं कि एक उत्पादन भौतिक होता है मतलब अस्तित्व के लिए प्रकृति से जरूरत की भौतिक वस्तुएं हासिल करने की प्रक्रिया होता है। साथ ही साथ मनुष्य को उत्पादन करने के लिए चिन्तन करना पड़ता है, एक-दूसरे से अनुभव साझा करना होता है। मनुष्य के पास एक विकसित मस्तिष्क है, एक प्रमस्तिष्क या बड़ा दिमाग होता है जो उसे अनूठी चिन्तन शक्ति प्रदान करता है। इसलिए कोई दूसरा जानवर मनुष्य से कहीं अधिक शारीरिक ताकत रखने के बावजूद अपने चिन्तन के जरिए प्रकृति से जरूरी चीजों का उत्पादन नहीं कर सका और सभ्यता की रचना नहीं कर सका। चूंकि मनुष्य के पास चिन्तन क्षमता है, इसलिए वह प्रकृति पर विजय प्राप्त करने के लिए प्रकृति के साथ द्वन्द्व के जरिए विचारों को पैदा कर सकता है और अनुभव प्राप्त कर सकता है। वह अनुभवों को फिर एक-दूसरे से साझा करता है। इस प्रकार एक तरफ जहाँ भौतिक उत्पादन है, वहीं दूसरी तरफ वैचारिक या बौद्धिक उत्पादन है। भौतिक उत्पादन के साथ-साथ बौद्धिक उत्पादन दोनों मानव समाज में हो रहे हैं। इसलिए किसी भी सामाजिक व्यवस्था के अस्तित्व का मतलब है एक निश्चित उत्पादन व्यवस्था का अस्तित्व में होना। मार्क्स ने इसी को इन शब्दों में व्याख्या करके बताया है–''*उत्पादन में लोग सिर्फ प्रकृति पर ही क्रिया नहीं करते हैं बल्कि एक दूसरे पर भी क्रिया कर रहे होते हैं। वे एक निश्चित तरीके से आपसी सहयोग और अपनी गतिविधियों के पारस्परिक आदान-प्रदान के जरिए उत्पादन करते हैं। उत्पादन करने के दौरान वे एक-दूसरे के साथ निश्चित जुड़ाव एवं संबंध स्थापित करते हैं और सिर्फ इन्हीं सामाजिक जुड़ावों तथा संबंधों के अंतर्गत ही प्रकृति पर उनकी क्रिया से उत्पादन होता है।*''[6] मार्क्स के इन शब्दों से स्पष्ट है कि लोगों के बीच आपसी सहयोग एवं संबंधों के बिना उत्पादन नहीं हो सकता। फिर उन्होंने कहा, ''*उत्पादन के ये सम्बंध उत्पादन की भौतिक शक्तियों के विकास की निश्चित मंजिल के अनुरूप होते हैं।*''[7] वे महान स्टालिन थे जिन्होंने उत्पादन की शक्तियाँ क्या हैं निम्नलिखित शब्दों में यह विस्तारपूर्वक बताया था, ''उत्पादन के औजार, जिनसे वस्तुगत मूल्यों का उत्पादन होता है, उत्पादन के उन औजारों का संचालन जो लोग करते हैं और उत्पादन के एक निश्चित अनुभव व श्रम कौशल-हुनर की बदौलत भौतिक मूल्यों के उत्पादन को निर्बाध जारी रखते हैं, इन सभी चीजों से मिलकर समाज की उत्पादन शक्तियां बनती हैं।''[8] मैं एक बार फिर मार्क्स का उद्धरण दूँगा–''*इन उत्पादन सम्बंधों का समाहार ही समाज का आर्थिक ढाँचा है –वह असली बुनियाद है, जिस पर कानून और राजनीति का ऊपरी ढाँचा खड़ा हो जाता है और जिसके अनुकूल ही सामाजिक चेतना के निश्चित रूप होते हैं।*''[9] इस विश्लेषण के आधार पर ही उनकी यह ऐतिहासिक टिप्पणी थी, ''*मनुष्यों की चेतना उनके अस्तित्व को निर्धारित नहीं करती, बल्कि उल्टे उनका सामाजिक अस्तित्व उनकी चेतना को निर्धारित करता है।*''[10] फिर उन्होंने कहा, ''*अपने विकास की एक खास मंजिल पर पहुँच कर समाज की भौतिक उत्पादन शक्तियाँ तत्कालीन उत्पादन सम्बंधों से, या उसी चीज को कानूनी शब्दावली में यों कहा जा सकता है –उन संपत्ति सम्बंधों से टकराती हैं, जिनके अन्तर्गत वे उस समय तक काम करती होती हैं। ये सम्बंध उत्पादन शक्तियों के विकास के अनुरूप न रह कर उनके लिए बेड़ियाँ बन जाते हैं। तब सामाजिक क्रान्ति का युग शुरू होता है।आर्थिक बुनियाद के बदलने के साथ समस्त वृहदाकार ऊपरी ढांचा भी कमोबेश तेजी से बदल जाता है।*''[10]

जो कुछ भी हमने मार्क्स की उपरोक्त शिक्षाओं से सीखा, संक्षेप में उसका उपसंहार इस तरह कर सकते हैं : जिन्दा रहने की जरूरत से मनुष्य को प्रकृति से उत्पादन करने की जरूरत पड़ती है और इस प्रक्रिया में उत्पादन शक्तियाँ एवं उत्पादन संबंध विकसित होते हैं। उत्पादन के औजार और मनुष्य जो भौतिक मूल्यों वाली चीजों का उत्पादन करने के लिए उन औजारों का उपयोग करते हैं, ये सब मिलकर उत्पादिका शक्तियाँ बनती हैं। उत्पादन संबंध एक निश्चित संबंध है जो उत्पादन के दौरान लोग आपस में एक-दूसरे को जो सहयोग देते हैं, उसके माध्यम से स्थापित होता है। इस उत्पादन संबंध को बनाये रख कर ही उत्पादन शक्तियाँ क्रिया करती हैं या उत्पादन करती हैं। उत्पादन संबंध तथा उत्पादन शक्तियाँ मिला कर समाज का आर्थिक ढाँचा बनता है। इसी आर्थिक आधार के समानुरूप समाज का ऊपरी ढाँचा विकसित हुआ होता है जिसमें मानवीय चेतना, मूल्यबोध, नीति-नैतिकता, न्यायिक ढाँचा, शासन की व्यवस्था, संस्कृति, जीवनशैली, सामाजिक संबंध, मर्दो तथा औरतों के बीच संबंध, राजनीतिक संगठन इत्यादि शामिल हैं। उत्पादन शक्तियों के विकास के क्रम में एक स्तर पर आकर विद्यमान उत्पादन संबंध उसकी आगे और प्रगति में बाधा पैदा करने लगते हैं। तब एक नया उत्पादन संबंध स्थापित करने की आवश्यकता पड़ती है जो उत्पादन शक्तियों के निर्बाध विकास के परिपूरक हो। उस मोड़ पर आकर मौजूदा उत्पादन संबंध तथा उत्पादन शक्तियों के बीच एक द्वन्द्व होता है या यों कहें कि असमाध्येय द्वन्द्व पैदा हो जाता है। यह टकराव या द्वन्द्व-संघर्ष सामाजिक क्रान्ति में तब्दील हो जाता है। दूसरी तरफ, अर्थव्यवस्था के दायरे में उत्पादन शक्तियों और उत्पादन संबंध के बीच असमाध्येय द्वन्द्व ऊपरी ढाँचा के क्षेत्र में मनुष्य की चेतना में प्रकट होता है। नतीजे के तौर पर यह द्वंद्व चिंतन के क्षेत्र में अभिव्यक्त होता है। उसी के अनुसार मनुष्य सामाजिक ढाँचे को बदलने के लिए क्रिया करता है। इसलिए, सामाजिक ढाँचे में बदलाव के मुताबिक ऊपरी ढाँचा (बौद्धिक उत्पादन का क्षेत्र) में भी कमोबेश तेजी से बदलाव होता है। उस नए आर्थिक ढाँचे के अनुरूप नया ऊपरी ढाँचा निर्मित होता है।

मार्क्सवाद की शिक्षाएं इस प्रकार दर्शाती हैं कि आर्थिक व्यवस्था अर्थात् आर्थिक ढाँचे के अंदर ही यह संघर्ष-द्वन्द्व उभर कर आता है और उसके आधार पर नई मानव चेतना के उन्मेष सहित पुराने के साथ नए विचारों के द्वन्द्व के जरिए ऊपरी ढाँचे में प्रकट होता है। आर्थिक व्यवस्था के अन्दर उत्पादन शक्तियों और उत्पादन संबंध के बीच द्वन्द्व का इजहार ऊपरी ढाँचे में चिन्तन की दो धाराओं या सोचने के दो ढंगों के बीच संघर्ष के रूप में होता है। इसके फलस्वरूप आर्थिक-राजनीतिक-सामाजिक आन्दोलन जो ऊपरी ढाँचे में विकसित होता है वह आर्थिक व्यवस्था के परिवर्तन को गति प्रदान करता है। किन्तु एक वर्ग विभाजित समाज में, शोषक मालिक वर्ग सचेत रूप से उत्पादन संबंध में इस बदलाव का सचेत तौर पर विरोध करता है। फलस्वरूप, ढाँचे के क्षेत्र में प्रगतिशील और प्रतिक्रियावादी शक्तियों के बीच संघर्ष-टकराव शुरू हो जाता है। गौरतलब है कि इस भौतिक जगत में बदलाव या विकास प्राकृतिक-नैसर्गिक नियम के अनुसार स्वत:स्फूर्त होते रहते हैं। परन्तु मानव समाज में, बदलाव की प्रक्रिया में चेतना अहम भूमिका अदा करती है। यह या तो इस प्रक्रिया को गति प्रदान करती है या बाधित करती है।

साथ ही साथ, यह भी सच है कि आर्थिक तथा राजनीतिक ढाँचों में बुनियादी परिवर्तन की गति की तुलना में ऊपरी ढाँचे में व्याप्त रिवाज, व्यवहार, स्वभाव, जीवन शैली में उस गति से परिवर्तन नहीं होते हैं। वे अतीत के खुमार की तरह बहुत दिनों तक रह जाते हैं।

उत्पादिका शक्तियों और उत्पादन संबंध के बीच द्वन्द्व के जरिये बदलता है समाज

अत:, मार्क्स की शिक्षाओं से हम लोग यह देख सके हैं कि सामाजिक बदलाव न तो किसी दैवी हस्तक्षेप से होता है, न ही किसी महान व्यक्तित्व की मर्जी से या अकस्मात् या बेतरतीबी से होता है। जैसा कि प्रकृति में परिवर्तन निश्चित नियम द्वारा नियंत्रित होते हैं, समाज में भी परिवर्तन निश्चित नियमों के नियंत्रण में होते हैं। जैसा कि हम ऊपर कह चुके हैं, सामाजिक परिवर्तन के पीछे उत्पादिका शक्तियों और उत्पादन संबंध के बीच द्वंद्व काम करता है। यह भी मार्क्स की ऐतिहासिक खोज है। एंगेल्स ने इसके बाद यह व्याख्या करके बताया था, ''*इसके परिणामस्वरूप (भूमि के आदिम सामुदायिक स्वामित्व के विघटन के बाद से) पूरा इतिहास निरन्तर सामाजिक विकास की भिन्न-भिन्न मंजिलों में वर्ग संघर्षों, शोषितों और शोषकों के बीच, शासितों और शासकों के बीच संघर्षों का इतिहास रहा है; ...*''[11] इसका मतलब है कि दासों और दासप्रभुओं के बीच, फिर भूदासों और सामंतों के बीच और फिर श्रम और पूंजी के बीच वर्ग संघर्ष इतिहास की चालक शक्ति रही है। इतिहास के इन तीनों चरणों में से हर एक में वर्ग संघर्ष उत्पादिका शक्तियों और उत्पादन संबंध के बीच द्वंद्व का प्रतिनिधित्व करता रहा है। इसलिए, दास व्यवस्था तथा फिर सामंतवाद को जिस प्रक्रिया से उखाड़ फेंका गया, उसी प्रकार श्रमिक वर्ग के नेतृत्व में पूँजीवाद को क्रान्तिकारी ढंग से उखाड़ फेंकना और समाजवाद की स्थापना भी अपरिहार्य है। इसके बाद वर्ग संघर्ष को द्रुतगति से चलाते हुए वर्गों का खात्मा किया जाएगा और अंतत: वर्गविहीन कम्युनिस्ट समाज की स्थापना होगी। तत्पश्चात, सभ्यता के विकास के नियमों के अनुसरण से समाज का उच्च से उच्चतर स्वरूप उभर कर आएगा। परन्तु यह स्वत:स्फूर्त नहीं होगा। निजी मालिकाना पर आधारित उत्पादन संबंधों को सफलतापूर्वक तोड़ देने के लिए जब तक उत्पादन शक्तियों में शामिल शोषित-पीड़ित लोग सचेतन रूप से एकजुट और लामबंद नहीं हो जाते, तब तक व्यवस्था में कोई बदलाव नहीं होगा, चाहे मौजूदा व्यवस्था कितने ही गहरे संकट से रूबरू हो या इस व्यवस्था का फन्दा चाहे कितना ही दमघोंटू क्यों न हो। यह व्यवस्था अपने आप खत्म नहीं होगी। इस संदर्भ में चेतना की भूमिका प्राथमिक है। प्रगतिशील सोच प्रगति की गति तेज करती हैं, जबकि प्रतिक्रियावादी सोच प्रगति को बाधित करती है। प्रकृति और मानव समाज में अंतर यहीं पर निहित है। क्योंकि सामाजिक प्रगति के परिपूरक परिवर्तन आरम्भ करने के लिए मनुष्य चेतना के आधार पर एक निर्णायक भूमिका अदा करता है। प्रकृति में तमाम विकास नए परिवर्तन को इंगित करते हैं। किन्तु मानव कल्याण तथा प्रगति के प्रश्न के साथ नाता जुड़ा होने की वजह से मानव समाज में प्रगतिशील और प्रतिक्रियावादी बदलावों की अवधारणा उभर कर आई है। काल्पनिक समाजवाद के पेरोकारों द्वारा पैदा की गयी बुनियादी गलतफहमी को सबसे पहले मार्क्स ने ही दूर किया और वैज्ञानिक समाजवाद की अवधारणा पेश की।

अतिरिक्त मूल्य की खोज–मार्क्स का अन्य ऐतिहासिक योगदान

मार्क्स का अन्य ऐतिहासिक योगदान, 'अतिरिक्त मूल्य' की खोज था। मजदूरों को ठग कर पूँजीपति इस अतिरिक्त मूल्य को हड़पता है। 'अतिरिक्त मूल्य' मुनाफे का स्रोत है। इससे पहले, ऐडम स्मिथ और रिकार्डो ने क्लासीकल अर्थशास्त्र में दिखाया था कि धन या मूल्य का सृजनकर्ता श्रम है। लेकिन उन्होंने सिर्फ इतना ही कहा, इससे आगे कुछ नहीं कहा। उनकी अवधारणा की जांच-परख करते हुए मार्क्स ने सवाल उठाया कि तब जो लोग धन पैदा कर रहे हैं वे सब धन के मालिक क्यों नहीं हैं? क्यों पूँजीपति मालिकों का एक तबका धन को हड़प रहा है और मजदूर सर्वहाराओं में तब्दील होते जा रहे हैं? मार्क्स ने

(शेष पृष्ठ 5 पर)

कार्ल मार्क्स

(पृष्ठ 4 का शेष)

दिखाया था कि पूँजीवाद में पूँजीपति दो तरीकों से पूँजी लगाते हैं। एक है 'अचल पूँजी' जो अपरिवर्तनीय रहती है। इस 'अचल पूँजी' से पूँजीपति कच्चा माल और उत्पादन के साधन खरीदते हैं। दूसरा घटक 'सचल पूँजी' या परिवर्तनकारी पूँजी होता है। 'सचल पूँजी' से पूँजीपति जरूरी मात्रा में श्रम शक्ति खरीदता है तथा मजदूरों को उतना ही वेतन भुगतान करता है जिससे मजदूरों और उनके परिवारों का जीवन यापन हो जाए।

मान लो कि एक कपड़ा मिल खरीदने के लिए एक पूँजीपति 12 लाख रुपए 'अचल पूँजी' खर्च करता है। फिर वह एक महीने के उत्पादन के लिए धागा बतौर कच्चा माल खरीदने में पचास हजार रुपये 'अचल पूँजी' खर्च करता है। फिर वह एक महीने के लिए श्रम शक्ति खरीदने पर 1 लाख रुपये 'सचल पूँजी' खर्च करता है। फिर, मान लो कि एक महीने में 3.5 लाख रुपए का कपड़ा पैदा हुआ। यदि कपड़ा मिल एक वर्ष काम करता है, यह हर महीने 1 लाख रिटर्न देता है। कपड़े के उत्पादन में लगे धागे को खरीदने के लिए 50 हजार रुपए का लागत खर्च भी शामिल है। मजदूरों को हर महीने दिया गया कुल वेतन 1 लाख रुपए है। इस तरह कुल उत्पादन लागत खर्च हुआ 1 लाख रुपए + 50 हजार + 1 लाख रुपये = 2.5 लाख रुपये। फिर कैसे 2.5 लाख रुपए की लागत से 1 लाख अतिरिक्त मूल्य पैदा किया और यह 3.5 लाख रुपये बन गया? मार्क्स ने दिखाया कि पूँजीपति मजदूरों की श्रमशक्ति 1 लाख रुपये में खरीद रहा है और 8 घण्टे प्रतिदिन काम करवा रहा है। इसे दूसरे तरीके से यूं कहा जा सकता है कि 4 घंटे श्रम शक्ति (न कि 8 घण्टे की श्रम शक्ति) का मूल्य 1 लाख रुपये है जबकि मजदूरों के श्रम ने 2 लाख रुपये के बराबर मूल्य पैदा किया है। यह एक लाख रुपए अतिरिक्त मूल्य जिसका भुगतान नहीं किया गया वह श्रम (अनपेड लेबर) है। मार्क्स ने दिखाया कि मिल मालिक पूँजीपति ने मजदूरों की श्रम शक्ति 1 लाख रुपए में खरीदी और मजदूरों से 8 घण्टे प्रतिदिन काम करवाया। मजदूरों ने 8 घण्टे का किया किन्तु उन्हें वेतन 4 घण्टे का दिया गया। ये बचे हुए 4 घण्टे 'अतिरिक्त श्रम' का प्रतिनिधित्व करते हैं। यही है जहाँ से 'अतिरिक्त' मूल्य' या मुनाफा आता है। मिल मालिक पूँजीपति मुनाफा कमाने के लिए इस 'अतिरिक्त' या जिसका भुगतान नहीं किया गया उस श्रम के मूल्य को हड़प लेता है। इस तरह, कपड़े से लेकर स्टील, खनन, धागे इत्यादि के साथ-साथ कपास की खेती जैसे कृषि आदि तमाम उद्योगों में पूँजीपति मजदूरों से 'अतिरिक्त श्रम' करवाते हैं और मुनाफे के रूप में इसे हड़प लेते हैं। बिना 'अतिरिक्त मूल्य' हड़पे पूँजीपति मालिक मुनाफा नहीं कमा सकता है। दूसरी तरफ, पूँजीपति जो पूँजी निवेश करता है वह भी श्रमिकों द्वारा पैदा की गई है। लेन-देन के जरिये के सिवाए रुपये-पैसे का अपना कोई मूल्य नहीं है जिससे श्रम शक्ति द्वारा पैदा की गई वस्तुएं एवं सेवाएं खरीदी जा सकती हैं। जमा किया गया रुपया-पैसा धन-दौलत है। पूँजी धन-दौलत का ही एक रूप है। अतः पूँजी भी मजदूरों या श्रम शक्ति द्वारा पैदा की गई है। इस प्रकार पूँजीपति पूँजी के भी सृजनकर्त्ता नहीं हैं। मार्क्स ने यह भी दिखाया कि से वाजिब वेतन से वंचित मजदूर ही पूँजीवादी बाजार में बहुसंख्यक खरीददार बनते हैं। ये मजदूर अपनी जरूरत के मुताबिक चीजों को खरीद पाने में असमर्थ होते हैं क्योंकि उन्हें वाजिब वेतन नहीं दिया जाता है। यह पूँजीवादी अर्थव्यवस्था में अवश्यंभावी तौर पर बाजार संकट पैदा करेगा और बाजार संकुचित हो जाएगा। मैं इस संबंध में एक अन्य बिन्दु जोड़ना चाहता हूँ। मार्क्स के समय के दौरान और बाद में भी काफी समय तक मजदूरों को एक हद तक उनके और उनके परिवार के जीने लिए भरण-पोषण लायक वेतन राशि दी जाती थी। परन्तु आज उतना वेतन भी नहीं दिया जाता है। क्योंकि तमाम पूँजीवादी-साम्राज्यवादी देशों की अर्थव्यवस्थाएं लगातार मंदी की गिरफ्त में हैं। इसलिए उत्पादन में गिरावट हो रहा है। उद्योग तालाबंदी या कारखानाबंदी से जूझ रहे हैं। लाखों बेरोजगार और छंटनीग्रस्त श्रमिक काम की तलाश में दर-दर भटक रहे हैं। चूंकि यहाँ कोई रोजगार का अवसर मुश्किल से है, इसलिए पूँजीपतियों द्वारा वेतन के नाम पर मामूली-सी जो कुछ भी पेशकश दी जाती है, उस पर राजी होने के लिए मजदूरों को मजबूर किया जा रहा है। किसी भी मामले में 'अतिरिक्त मूल्य' की खोज के द्वारा मार्क्स जगजाहिर कर गए कि कैसे पूँजीपति सम्पूर्ण धन के सृजनकर्ता मजदूरों का बेरहमी से शोषण कर भारी मुनाफा कमा रहे हैं। इसलिए पूँजीवाद में इन्साफ बेइन्साफी पर आधारित होता है। इस सच्चाई को उजागर करने के लिए मानव सभ्यता मार्क्स की ऋणी हैं।

वहीं मार्क्स का एक अन्य ऐतिहासिक कथन है। मार्क्स से पूर्ववर्ती काल में बुर्जुआ जनतांत्रिक क्रान्ति के चरण में चूंकि यांत्रिक वस्तुवादी, संशयवादी और धर्मनिरपेक्ष मानवतावादियों सरीखे वस्तुवादी दार्शनिकों ने वैज्ञानिक वस्तुवाद को विकसित नहीं किया था, इसलिए मार्क्स उन्हें 'विचारशील वस्तुवादी'(कंटेम्प्लेटिव मैटरियलिज्म) करार दिया था और कहा था कि *''विचारशील या ''अनुध्यानवादी भौतिकवाद की अर्थात् उस भौतिकवाद की जो ऐन्द्रीयता को व्यावहारिक क्रिया नहीं मानता–चरम उपलब्धि ''नागरिक समाज'' में पृथक व्यक्तियों का अनुध्यान है।''* [12] द्वन्द्वात्मक वस्तुवाद के बारे में उन्होंने कहा था, *''पुराने समाज का दृष्टिबिन्दु ''नागरिक'' समाज है, नये भौतिकवाद का दृष्टिबिन्दु मानव समाज या समाजीकृत मानव है।''* [13] इससे उनका अभिप्राय था कि पूर्ववर्ती वस्तुवादियों ने 'व्यक्ति विशेष' (व्यक्ति स्वार्थ) को प्रधानता दी थी जबकि उनके द्वारा खोजे गये द्वन्द्वात्मक वस्तुवाद ने सामूहिककृत मानव समाज या समाजीकृत मानवजाति की धारणा प्रदान की। उनके कथनानुसार चूंकि बुर्जुआ जनतांत्रिक क्रान्ति व्यक्तिगत मालिकाना और व्यक्तिगत अधिकार स्थापित करने के लिए क्रान्ति थी, इसलिए उस समय के वस्तुवादियों ने व्यक्तिगत स्वार्थ को प्राथमिकता दी थी। इसके विपरीत द्वन्द्वात्मक वस्तुवाद ने दिखाया था कि जब समाज पूँजीवाद को उखाड़ फेंक कर समाजवाद के संक्रमण काल से गुजरते हुए साम्यवाद के स्तर पर पहुँचेगा, तब वहाँ व्यक्तिगत स्वार्थ जैसा कुछ भी नहीं होगा। संपूर्ण मानव जाति समाजीकृत हो जाएगी। इस उद्घोषणा की आगे विस्तारपूर्वक व्याख्या करते हुए कॉमरेड शिवदास घोष ने दिखाया था कि साम्यवाद में लोग न केवल निजी संपत्ति से ही मुक्त होंगे बल्कि जीवन के तमाम पहलुओं में निजी संपत्ति जनित मानसिक ग्रंथि से भी मुक्त होंगे और व्यक्तिगत स्वार्थ समाजिक स्वार्थ के साथ एकात्म हो जाएगा। साम्यवादी समाज के विशिष्ट लक्षण को रेखांकित करने के लिए मार्क्स और एंगेल्स ने *'कम्युनिस्ट घोषणा पत्र'* में कहा था : *''तब वर्गों और वर्ग विरोधों से बिंधे पुराने समाज के स्थान पर एक ऐसे संघ की स्थापना होगी जिसमें व्यष्टि की स्वतंत्र प्रगति समष्टि की स्वतंत्र प्रगति की शर्त होगी।''* [13क]

फुयरबाख तथा मार्क्स

आप को भी जानना जरूरी है कि मार्क्स पहले पहल फुयरबाख के अनुयायी थे, जो वामपंथी हेगेलीय (लेफ्ट हेगेलियन) के रूप में जाने जाते थे। परन्तु कुछ ही समय में उन्होंने फुयरबाख के चिन्तन की सीमाबद्धता और उनके संशय को महसूस कर लिया। यद्यपि फुअरबाख ने हेगेल के 'शाश्वत भाव' की अवधारणा को खारिज कर दिया था, लेकिन विचार या चिन्तन मनुष्य में कैसे प्रकट होता है इसका कोई वैज्ञानिक स्पष्टीकरण वे प्रदान नहीं कर सके। बाद में मार्क्स ने बताया कि मानव मस्तिष्क जो पदार्थ से बना हुआ है, उसकी बाह्य वस्तुजगत के साथ द्वन्द्वात्मक अंतःक्रिया की प्रक्रिया के माध्यम से विचार या चिन्तन की उत्पत्ति होती है। चूंकि वस्तुजगत परिवर्तनशील है, चिंतन-विचार या भाव का भी परिर्वतन होता है। इसलिए कोई भी विचार शाश्वत विचार या शाश्वत भाव नहीं हो सकता है। फुयरबाख को इसका कोई सुराग नहीं मिला था। परन्तु साथ ही वे इस बात को नकार नहीं पाए कि समाज पर विभिन्न चिन्तनों तथा विचारधाराओं का प्रभाव रहता है। इसलिए मार्क्स के शब्दों में : *''उनकी (फुयरबाख की) दृष्टि में मानवीय सार केवल ''वंश'' ("genus") की शक्ल में समझा जा सकता है, अर्थात् मूक अंतर्निहित सामान्यता के रूप में जो केवल प्रकृत्या बहुत-से व्यक्तियों को ऐक्यबद्ध कर देती है।... अपनी यथार्थता में वह सामाजिक संबंधों का सांकल्य है।''* [14] इस प्रकार, मार्क्स ने दिखाया था कि फुयरबाख के मतानुसार विचार, नीति-नैतिकता और विचारधारा को यह मानना चाहिए कि ये प्रत्येक एकल व्यक्ति के मानवीय सार में अन्तर्निहित रहती हैं और बहुत सारे व्यक्तियों को एकजुट करती है। मानवीय सार विद्यमान सामाजिक संबंधों पर आधारित समाज के एक विशेष दौर में विकसित होता है। मार्क्स ने फुयरबाख के बारे में यह भी कहा था, *''फुयरबाख यह नहीं देखते कि ''धार्मिक भावना'' स्वयं ही एक सामाजिक उपज है और जिस अमूर्त व्यक्ति का उन्होंने विश्लेषण किया है, वह वस्तुतः समाज की एक विशेष व्यवस्था का प्राणी है।''* [15] फुयरबाख ने दैवीय धर्म को नकार दिया था और धर्म की एक नई परिभाषा प्रदान की थी। उन्होंने कहा था कि धर्म शब्द लैटिन शब्द रेलिगेर *("religare")* से लिया गया है जिसका मतलब है बांधना। मानवों के बीच यह घनिष्ठ बंधन धर्म के तौर पर हमेशा रहेगा। इस तरह उन्होंने सर्वकाल के लिए मान्य मूल्यबोधों की बात की और इसे नया धर्म कहा। उन्होंने इसकी व्याख्या, *''अपने लिए विवेकसम्मत आत्मसंयम और दूसरों के साथ अपने संसर्ग में प्रेम–बार-बार वही प्रेम! ..''* [16] के तौर पर की थी। लेकिन फुयरबाख ने यह व्याख्या करके नहीं बताया कि उसके 'हम खुद के' और 'दूसरे' किस दौर से संबंधित हैं। उनके मतानुसार, मानो इन्सान अमूर्त हो और इतिहास से अलग-थलग हो। इसलिए यह कह कर इसका खण्डन किया था कि, *''फुयरबाख यह नहीं देखते कि ''जिस अमूर्त व्यक्ति का उन्होंने विश्लेषण किया है, वह वस्तुतः समाज की एक विशेष व्यवस्था का प्राणी है।''* [17] लेकिन जो सवाल स्वाभाविक तौर पर उठा वह यह था कि श्रम और पूंजी दो वर्गों में विभाजित एक समाज में फुयरबाख के ''विवेकसम्मत आत्म-संयम'' और ''प्यार'' का कैसे निर्धारण किया जाएगा? यह उनकी इस प्रस्थापना से निकल कर आता है कि पूंजीवादी मालिक ''विवेकसम्मत आत्म-संयम'' का इस्तेमाल करते हुए मुनाफा कमायेंगे और ''प्यार'' की अभिव्यक्ति के तौर पर मजदूरों का वेतन तय करेंगे। इसलिए, फुअरबाख अनजाने ही बुर्जुआ धर्मनिरपेक्ष मानवतावाद की धारणा के प्रवक्ता बन गए थे जो उदीयमान पूंजीवाद के युग में उभर कार आया था और स्वतंत्रता-समानता-भाईचारे की धारणा के साथ-साथ समान अधिकार, अनूठे संविधान, अनूठी न्यायिक व्यवस्था और चाहे कोई किसी भी वर्ग का हो, इसका लिहाज किये बिना सबके लिए लागू एक जैसी नीति-नैतिकता एवं मूल्यबोधों की अवधारणा बुलंद की थी। आज, शोषित-पीड़ित लोग असहनीय व्यथा-वेदना के साथ अहसास कर रहे हैं कि इस शोषणमूलक व्यवस्था में इस बुर्जुआ मानवतावाद का नतीजा कितना निर्दय रहा है। शाश्वत भाव की हेगेलीय अवधारणा को नकार देने के बाद, फुयरबाख ने वस्तुतः बुर्जुआ मानवतावाद को शाश्वत, अपरिवर्तनीय (एब्सोल्यूट) जैसा कुछ बना डाला था। इसलिए, वस्तुवाद के बारे में यह कहा था, *''मेरे लिए भौतिकवाद मानव सार और ज्ञान की इमारत की नींव है, पर मेरे लिए यह वही चीज –यानी खुद इमारत –नहीं है, जो वह, संकीर्णतर अर्थ में, शरीर-क्रियाविज्ञानी तथा प्रकृति-विज्ञानी के लिए–उदाहरणार्थ मोलेशात के लिए–है और उनके दृष्टिकोण और व्यवसाय के अनुसार आवश्यक है। पीछे जाया जाये तो मैं भौतिकवादियों से पूर्णतया सहमत हूँ, पर आगे जाया जाये तो नहीं।''* [18] उनके द्वारा की गई ऐसी टिप्पणी पर गौर करते हुए मार्क्स के योग्य सहयोद्धा एंगेल्स ने यह कहा था, *'' इस ''नींव'' के बावजूद वह यहां परम्परागत भाववादी बेड़ियों में बंधे रह गये।''* [19]

(शेष पृष्ठ 6 पर)

कार्ल मार्क्स

(पृष्ठ 5 का शेष)

एंगेल्स ने यह भी कहा था : *''फुयरबाख का असली भाववाद उस समय प्रगट हो जाता है, जब हम उनके धर्म और आचार-नीति के दर्शन पर आते हैं। ...''* [19क] फुयरबाख इसलिए विफल हुए कि वे सत्य की खोज में एकमात्र औजार के तौर पर वैज्ञानिक कार्यपद्धति को स्वीकार नहीं कर सके। उनकी विफलता का अन्य कारण यह समझने में उनकी असमर्थता रही कि एक वर्ग-विभाजित समाज में किसी भी व्यक्ति का विचार, भले ही वह ईमानदार हो या प्रतिभावान, वर्ग विचार के सिवाय और कुछ नहीं हो सकता। इसलिए, अनजाने ही वे उदीयमान पूंजीपति वर्ग के चिंतक बन कर रह गए। यहीं पर उनका मार्क्स से बुनियादी मतभेद था। फुयरबाख अपने दर्शन के आधार का ही पता लगाने में विफल रहे या दूसरे शब्दों में, किस तरह के वर्ग-विभाजित समाज में वे किस वर्ग विचार को पेश कर रहे हैं और कैसे वह उनके द्वारा सम्भव हुआ यह मार्क्स ने बड़े सुन्दर ढंग से यूं व्यक्त किया है : *''भौतिक (धर्मनिरपेक्ष) आधार अपने को अपने से पृथक कर लेता है और जाकर आसमान में अपने को एक स्वतंत्र क्षेत्र के रूप में स्थापित करता है, के इस भौतिक (धर्मनिरपेक्ष) आधार के आत्म-विभाजन और आत्म-विरोध द्वारा ही समझा जा सकता है।''* [20] इसका मतलब है कि फुयरबाख के धर्मनिरपेक्ष मानवतावाद का आधार ही पूंजीवादी व्यवस्था था और वे यह नहीं समझ पाये कि इसकी व्याख्या केवल इस व्यवस्था के अन्दर अन्तर्द्वंद्वों और टकरावों को समझने से ही की जा सकेगी।

उन्नततर साम्यवादी समाज की मार्क्सीय रूपरेखा

दूसरा एक पहलू खास तौर पर गौरतलब है। द्वंद्वात्मक वस्तुवाद को इस्तेमाल करते हुए मार्क्स ने उन्नततर साम्यवादी समाज की रूपरेखा बनाई थी जिसमें न केवल वर्ग विभाजन नहीं होगा, वर्ग शोषण और वर्ग शासन का खात्मा हो जाएगा, बल्कि आम आदमी ऐसी नीति-नैतिक स्तर हासिल कर लेंगे जहां व्यक्तिगत स्वार्थ, लोभ-लालच, ईर्ष्या-द्वेष और धोखाधड़ी की मानसिकता का कोई अवशेष तक नहीं रहेगा। हर किसी की शारीरिक और मानसिक प्रतिभाओं के उन्मुक्त विकास के अवसर खुल जाएंगे और किसी की व्यक्तिगत आजीविका की स्वार्थपूर्ति के लिए नहीं, बल्कि पूरे समाज के चहुँमुखी विकास के लिए सभी खुशी-खुशी और स्वेच्छा से मेहनत करेंगे। साम्यवादी समाज पुरुषों और महिलाओं के बीच वास्तविक समानता, बुजुर्गों की भलाई और बच्चों का पूर्ण विकास सुनिश्चित करता है। कम्युनिस्ट संस्कृति के आधार पर जब नीति-नीतिकता, कर्तव्य परायणता इतना ऊँचा स्तर हासिल कर लेगी कि राज्य, सरकार, कानून का शासन और दमन के यंत्र अप्रासंगिक होकर मुरझा जाएंगे। इस प्रकार, जो धर्म प्रचारकों और बुर्जुआ मानवतावादियों की कल्पना से भी परे था, वह मार्क्सवाद द्वारा दिखाया गया कि उन्नततर साम्यवादी समाज में साकार किया जा सकता है।

महान एंगेल्स ने द्वंद्वात्मक वस्तुवाद को दी थी मार्क्सवाद की संज्ञा

मार्क्स की जन्म जयंती का द्विशताब्दी वर्ष समारोह मनाने की इस सभा में मैंने आपके सामने उनके कुछ बेशकीमती योगदान रखे जैसे कि मैंने अपनी तमाम सीमाबद्धताओं के बावजूद मार्क्स-एंगेल्स-लेनिन-स्तालिन माओं त्से-तुंग-शिवदास घोष से सीखे हैं। मैं एक अन्य महान चिंतनकार फ्रेडरिक एंगेल्स के योगदान को भी संक्षेप में याद दिलाना चाहूंगा। वे न केवल मार्क्स के योग्य क्रान्तिकारी सहयोद्धा थे बल्कि द्वंद्वात्मक वस्तुवाद का इस्तेमाल करते हुए उन्होंने मार्क्सवाद को समृद्ध भी किया। इस संदर्भ में उनकी कुछ क्लासीकल कृतियों का नाम लेना ही वाजिब है जैसे 'प्रकृति की द्वंद्वात्मकता', 'ड्यूहरिंग मतखण्डन', 'परिवार, निजी सम्पत्ति और राजसत्ता की उत्पत्ति', 'लुडविग फुयरबाख और क्लासीकल जर्मन दर्शन का अंत' और 'वानर से नर बनने में श्रम की भूमिका'। द्वंद्वात्मक वस्तुवाद को समझने के लिए उनकी इन कृतियों को बारीकी से पढ़ना चाहिए। ऐतिहासिक 'कम्युनिस्ट घोषणापत्र' मार्क्स और एंगेल्स दोनों के द्वारा संयुक्त रूप से लिखा गया था। मार्क्स अपनी युगांतकारी ग्रंथ 'पूंजी' के प्रथम खण्ड का ही प्रकाशन अपने जीवनकाल में करवा पाये थे। मार्क्स की मृत्यु के बाद एंगेल्स ने अपने गिरते स्वास्थ की परवाह न करते हुए मार्क्स की पाण्डुलिपियों को संग्रहित करने और अध्ययन करने के लिए जीतोड़ मेहनत की और जरूरी संपादन के बाद 'पूंजी' के दूसरे और तीसरे खण्ड का प्रकाशन कराया। वरना, दुनिया के लोग ऐसे एक विशाल और चिरस्थायी ग्रंथ से परिचित नहीं हो पाते। ये एंगेल्स ही थे जिन्होंने द्वंद्वात्मक वस्तुवाद को मार्क्सवाद नाम दिया था। जब उनसे यह पूछा गया कि उन्होंने अपना खुद का नाम बाहर रखकर इसे मार्क्सवाद क्यों कहा, तो एंगेल्स ने जो जवाब दिया था वह न केवल उनके बड़प्पन की निशानी है बल्कि यह हम सब के लिए बहुत ही शिक्षाप्रद और उदाहरणीय है। उन्होंने कहा था :*''यहां में कुछ व्यक्तिगत सफाई पेश करने की अनुमति चाहता हूँ। इधर इस सिद्धांत में मेरे योगदान की बार-बार चर्चा हुई, अत: इस प्रश्न के समाधान के लिए कुछ कहना मेरे लिए जरूरी हो गया है। मैं इससे इनकार नहीं कर सकता कि मार्क्स के साथ चालीस वर्षों के अपने सहयोग के समय और इससे पहले भी इस सिद्धांत की बुनियाद डालने और विशेषकर इसे विसित करने में मेरा एक हद तक स्वतंत्र योगदान रहा है। पर इसके अग्रणी, मूलभूत सिद्धांतों का अधिकतर भाग, खासकर अर्थशास्त्र और इतिहास के क्षेत्र में, और सर्वोपरि इन सिद्धांतों का सटीक निरुपण मार्क्स की देन है। मेरा जो योगदान है –बहरहाल, कुछ विशेष क्षेत्रों को छोड़कर –उसकी पूर्ति मार्क्स आसानी से मेरे बिना भी कर लेते। पर मार्क्स की उपलब्धि मेरी उपलब्धि नहीं हो सकती थी। मार्क्स बाकी हम सभी लोगों से ऊंचे थे, अधिक दूर तक देखते थे, उनकी दृष्टि अधिक व्यापक थी और अधिक द्रुत भी। मार्क्स महामनीषी थे, बाकी हम लोगों को अधिक से अधिक साधारण प्रतिभासम्पन्न कहा जा सकता है। उनके बिना यह सिद्धांत कभी वह न होता, जो वह आज है। इसलिए मार्क्स के नाम पर उसका नाम होना एकदम ठीक है।''* [21] आप जानते हैं कि इतिहास ने जिस महान मनीषी कार्ल मार्क्स को पैदा किया उन्होंने 14 मार्च, 1883 को अन्तिम सांस ली थी। 17 मार्च को एंगेल्स ने गहरे दुख के साथ उनकी कब्र पर खड़े होकर कहा था, *''... संसार के सबसे महान जीवन्त विचारक की चिन्तन प्रक्रिया बन्द हो गयी। ... जीवन में उनका उद्देश्य किसी न किसी तरह पूँजीवादी समाज और उससे पैदा होने वाली राजकीय संस्थाओं के ध्वंस में योगदान करना था, आधुनिक सर्वहारा वर्ग को आजाद करने में योगदान करना था, जिसे सबसे पहले उन्होंने ही अपनी स्थिति और आवश्यकताओं के प्रति सचेत किया और बताया कि किन परिस्थितियों में उनका उद्धार हो सकता है। ... उनका नाम युगों-युगों तक अमर रहेगा, वैसे ही उनका काम भी अमर रहेगा!''* [22] (मार्क्स की समाधि पर भाषण) इन दो महान विचारकों की अतुलनीय गहरी दोस्ती पर टिप्पणी करते हुए लेनिन ने कहा था, *''प्राचीन इतिहास में मैत्री के कितने ही हृदयस्पर्शी उदाहरण मिलते हैं। यूरोपीय सर्वहारा कह सकता है कि उसके विज्ञान की रचना दो ऐसे पण्डितों और योद्धाओं ने की जिनके परस्पर संबंधों ने प्राचीन लोगों की मानवीय मैत्री की अत्यंत हृदयस्पर्शी कथाओं को पीछे छोड़ दिया। एंगेल्स सदा ही –और आम तौर पर न्यायसंगत रूप से–अपने को मार्क्स के बाद रखते थे। ''मार्क्स के जीवन काल में, '' उन्होंने अपने एक पुराने मित्र को लिखा था, ''मैंने पूरक की भूमिका अदा की।'' जीवित मार्क्स के प्रति उनका प्रेम और मृत मार्क्स की स्मृति के प्रति उनका आदर असीम था।''* [23] (फ्रे. एंगेल्स के बारे में)

(शेष अगले अंक में)

'मार्च फॉर डेमोक्रेसी'

(पृष्ठ 1 का शेष)

ने शिरकत की। जंतर मंतर पर आकर यह एक जनसभा में तब्दील हो गया, जिसमें अन्यों के अलावा प्रशांत भूषण, कुलदीप नैय्यर व अग्निवेश ने संबोधित किया।

एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) से जुड़े दिल्ली राज्य के सभी जनसंगठनों ने इस मार्च में भाग लिया। गौरी लंकेस की स्मृति में एक मिनट के मौन धारण और एआईयूटीयूसी के ऑल इंडिया सचिवमण्डल सदस्य कॉ. आर.के. शर्मा द्वारा प्रस्तुत गीत के साथ जनसभा शुरू हुई।

वाम दलों के जनसंगठनों की ओर से आयोजित सभा को एसयूसीआई(कम्युनिस्ट), दिल्ली सचिव कॉ. प्राण शर्मा ने संबोधित किया। उन्होंने कहा कि अपने पतनशील दौर में विश्व पूंजीवादी व्यवस्था एक अंतहीन और असमाधेय बाजार संकट में फंस गई है। पूंजीवादी वर्ग द्वारा अपने संकट के पूरे बोझ को भारी करों, शिक्षा और स्वास्थ्य देखभाल और अन्य जनसेवाओं के निजीकरण-व्यापारीकरण, अर्थव्यवस्था के सैन्यीकरण, स्थानीय और आंशिक युद्धों और आतंकवाद को बढ़ावा देने के माध्यम से श्रमिक वर्ग के कंधों पर डाला जा रहा है। जबकि पूंजीपतियों को सभी संभव कर-छूट, रियायतें दी जा रही हैं जो वास्तव में इस संकट के लिए उत्तरदायी हैं। उन्होंने कहा कि मेहनतकश जनता निर्मम शोषण से त्रस्त है, परिवर्तन चाहती है और हर जगह विरोध प्रदर्शनों में सड़कों पर उतर रही है। लेकिन शासक पूंजीपति वर्ग और उसके सेवक राजनीतिक दल इन आन्दोलनों को कुचलने और असहमति की आवाज उठाने वालों को मौत के घाट उतारने तक के लिए फासीवादी तरीकों का सहारा ले रहे हैं। असली मुद्दों से जनता का ध्यान हटाने के लिए और उनकी एकता को तोड़ने के लिए शासक पूंजीपति वर्ग साम्प्रदायिक, जातीय, क्षेत्रीय और जातिगत भावनाओं को भड़काता है ताकि लोगों को भ्रातृघातक शत्रुता में लिप्त किया जा सके। उन्होंने कहा कि फासीवाद सभी पूंजीवादी देशों के लिए आम लक्षण हो गया है और जब तक पूंजीवाद कायम है गौरी, कलबुर्गी, पंसारे और दाभोलकर सरीखे लोगों को अपनी जान से हाथ धोना पड़ेगा।

उन्होंने कहा कि इन हालात को खत्म करने के लिए हमें इस बात का अहसास होना चाहिए कि पूंजीवादी व्यवस्था को इस धरती से मिटा दिया जाना चाहिए और मेहनतकश लोगों की जरूरतें पूरी करने वाली एक नई व्यवस्था कायम करने की जरूरत है।

दिल्ली मेट्रो किराया वृद्धि का विरोध

दिल्ली : मेट्रो किराया वृद्धि के खिलाफ 11 अक्टूबर को एआईयूटीयूसी एवं एसयूसीआई(सी) की शालीमार बाग/पीतमपुरा लोकल कमेटी ओर से आजादपुर मेट्रो स्टेशन से आजादपुर टर्मिनल, अंडरपास से होते हुए जुलूस निकाले गये और 5 जगहों पर नुक्कड़ सभाएं की गई। कार्यकर्ता नारे लिखी हुई पट्टिकाएं लिए हुए थे। वे 'मेट्रो किराया वृद्धि वापस लो', 'किराया वृद्धि नहीं चलेगी' आदि नारे लगा रहे थे।

एआईयूटीयूसी दिल्ली राज्य अध्यक्ष कॉ. हरीश त्यागी, दिल्ली राज्य सचिव कॉ. मैनेजर चौरसिया, एसयूसीआई(सी) की शालीमार बाग इंचार्ज कॉ. प्रकाश देवी, कॉ. आजाद, कॉ. सुरेश निषाद आदि ने नुक्कड़ सभाओं को सम्बोधित किया। वक्ताओं ने कहा कि डीएमआरसी द्वारा इस साल दो बार लगभग 100 गुना मेट्रो किराया वृद्धि की गई है। जहां जनता पहले से ही महंगाई से परेशान है, वहां लोगों को राहत देने की बजाय यह एक ओर आर्थिक हमला है। वक्ताओं ने जनता से अपील की कि वह इस जनविरोधी कदम के विरोध में एकजुट हो आन्दोलन में शामिल हों। मेट्रो किराया वृद्धि तुरंत वापस लेने की मांग की।

महान नवम्बर क्रान्ति शताब्दी वर्ष ...

(पृष्ठ 1 का शेष)

की सेवा में और आम जनता के खिलाफ 5 साल कहर ढाती है। जनता आक्रोशित होकर चुनाव में उस पार्टी को परास्त करती है और एक नयी पार्टी की सरकार बनती है। फिर दूसरी पार्टी भी यही काम करती है और पहली वाली पार्टी फिर से चुनाव जीतकर सत्ता में आ जाती है। पर आम जनता की स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं होता है। वही शोषण-जुल्म की चक्की में पीसती रहती है। इस स्थिति से मुक्ति का मार्ग क्या है? यही मार्ग आज से 100 वर्ष पूर्व रूस की महान नवम्बर क्रांति ने दिखाया था कि सरकार बदलने से पूंजीपति वर्ग के हितों की अनदेखी कर जनता के हित में काम नहीं किया जा सकता। इस स्थिति में सरकार नहीं, व्यवस्था परिवर्तन ही एकमात्र रास्ता है। इसके लिए पूरे देश भर में जोरदार जनआन्दोलन की लहर पैदा करनी होगी और पूंजीपति वर्ग के हितों की रक्षा के लिए बनी राजसत्ता पर चोट कर उसे क्रांति के माध्यम से उखाड़ फेंकना होगा और मजदूर-किसानों का राज कायम करना होगा। रूस में ऐसा ही हुआ था। तभी जाकर एक गरीब, पिछड़ा मुल्क दुनिया के साम्राज्यवादी वित्तशील मुल्कों को पीछे छोड़ते हुए, शीर्ष स्थान पर काबिज हुआ था। विज्ञान, कला, खेल-कूद, कृषि, उद्योग, शिक्षा आदि के चहुंमुखी विकास की एक मिसाल कायम की थी। आज हमें इसी क्रांति से सीख लेते हुए भारत की विशेष परिस्थिति में कार्यान्वित करना होगा।

सभा को एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) झारखंड राज्य सचिव कॉमरेड रबीन समाजपति ने भी संबोधित किया।

सभा की अध्यक्षता पार्टी के पूर्वी सिंहभूम जिला सचिव कॉमरेड बिमल दास ने की। पार्टी के राज्य कमिटी सदस्य कॉमरेड सुमित राय ने मंच संचालन किया। इस मौके पर कई क्रांतिकारी गीत भी प्रस्तुत किये गये।

जमशेदपुर : विचार गोष्ठी को सम्बोधित करते हुए कॉ. अरुण कुमार सिंह

शिक्षण शिविर सम्पन्न

जौनपुर (उ.प्र.) : 23-24 सितम्बर को एआईडीवाईओ की उ0प्र0 राज्य कमेटी के बैनर तले श्री रामचन्द्र शिक्षण संस्थान खजुरन बदलापुर जौनपुर में महान नवम्बर क्रान्ति के अवसर पर दो दिवसीय राज्य स्तरीय ''शिक्षण शिविर'' सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। 23 सितम्बर को सायंकालीन सत्र में ''देशभक्ति एवं राष्ट्रभक्ति के मायने क्या है'' विषय पर वाद-विवाद हुआ, जिस पर उपस्थित लोगों ने अपने-अपने विचार व्यक्त किये। संगठन के प्रदेश सचिव कॉ. मकरध्वज एवं संगठन के प्रदेश उपाध्यक्ष कॉ. प्रमोद कुमार शुक्ल ने भी अपने विचार रखे। अन्त में इस कार्यक्रम के मुख्य वक्ता एसयूसीआई(कम्युनिस्ट) के स्टाफ मेम्बर कॉ. अरुण कुमार सिंह ने विस्तार से चर्चा करते हुए बताया कि इस वर्ग विभाजित समाज में बुर्जुआ वर्ग एवं सर्वहारा वर्ग दोनों के लिए देशभक्ति के मायने अलग-अलग होते हैं।

इस सत्र के अन्त में सांस्कृतिक कार्यक्रम हुए। 24 सितम्बर को पी.टी. एवं कबड्डी प्रतियोगिता हुई। प्रात: के सत्र में ''बेरोजगारी की समस्या का समाधाान इस व्यवस्था में सम्भव है या नहीं ?'' विषय पर वाद-विवाद हुआ तथा महान नवम्बर क्रान्ति पर लोगों ने प्रश्न रखे। इसी बीच एआईडीवाईओ की राज्य कमेटी के सदस्य कॉ. कुबेर चौहान ने जादू का प्रस्तुतीकरण कर लोगों को सामाजिक बुराइयों एवं बाबाओं के पाखंडों से सावधान किया। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता कॉ अरुण कुमार सिंह ने बेरोजगारी एवं जीवन की तमाम समस्याओं को नवम्बर क्रान्ति से जोड़ते हुए बताया कि इस पूंजीवादी व्यवस्था मे इन समस्याओं का समाधान सम्भव नही है। इनका समाधान पूंजीवाद-विरोधी समाजवादी क्रान्ति के फतह होने पर ही सम्भव है। इसलिए सचेत एवं संगठित होकर रोजमर्रा की समस्याओं के खिलाफ जोरदार आन्दोलन खड़ा कर इस दिशा में आगे बढ़ने की कोशिश करनी चाहिए। अन्त में जी.एस. गान के साथ कार्यक्रम समाप्त हो गया।

जनसभा आयोजित

हांसी (हरियाणा) : आज महान नवम्बर क्रांति शताब्दी वर्ष मनाने की कड़ी में एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) पार्टी की हिसार इकाई द्वारा पार्टी के जिला सचिव मेहर सिंह की अध्यक्षता में स्थानीय नई अनाज मण्डी में जनसभा का आयोजन किया और बाद में शहर में प्रदर्शन किया।

जनसभा में बोलते हुए सचिव व केन्द्रीय कमेटी सदस्य कॉमरेड सत्यवान ने कहा कि देश में बढ़ती बेरोजगारी, महंगाई, कर्ज के बढ़ते बोझ, किसान-मजदूरों की आत्महत्याओं, महिलाओं पर बढ़ते हमलों, बेइलाज मौतों व भ्रष्टाचार की असल जड़ पूंजीवादी व्यवस्था है। उन्होंने आगे कहा कि 7 नवम्बर 1917 को रूस में समाजवादी क्रान्ति सफल हुई थी। समाजवादी क्रान्ति के बाद रूस में हर तरह के शोषण-उत्पीड़न का खात्मा हो गया था। दुनिया के इतिहास में एक नए युग की शुरूआत हुई थी। महान नवम्बर क्रान्ति ने समाज विकास के द्वार खोल दिए थे। सभी को रोजगार, रोटी, कपड़ा व मकान, शिक्षा व इलाज की गारन्टी हो गई थी। रूस की समाजवादी क्रान्ति को दुनिया भर के महापुरुषों समेत मनीषियों, भारतीय क्रान्तिकारियों नेताजी सुभाषचन्द्र बोस, भगत सिंह, शरतचन्द्र, नजरूल इस्लाम, मेघनाथ साहा, सत्येन्द्र बसु, मुंशी प्रेमचंद, रवीन्द्रनाथ टैगोर, आइंस्टीन आदि ने खूब सराहा था।

पार्टी के जिला सचिव कॉ. मेहर सिंह ने कहा कि हरियाणा प्रदेश में बीजेपी एवं संघ परिवार द्वारा साम्प्रदायिकता, जातपात, धर्मान्धता व रूढ़िवाद फैलाया जा रहा है। उन्होंने कहा कि पूंजीपति वर्ग लोगों की एकता को तोड़ने व उनकी धन-सम्पदा और मजदूर किसानों की मेहनत को लूटने के इसी तरह के हथकण्डे अपनाता है। उन्होंने आगे कहा कि जनसमस्याओं के खिलाफ लगातार आंदोलन ही एकमात्र रास्ता है। एसयूसीआई(सी) ही एकमात्र ऐसी पार्टी है जो पूंजीवाद-विरोधी समाजवादी क्रान्ति का रास्ता दिखा रही है जिसको इस युग के अन्यतम मार्क्सवादी चिंतनकार कॉमरेड शिवदास घोष ने बनाया था। जनसभा को कॉ. हवासिंह, मंजू, कॉ. सत्यनारायण भाटोल आदि ने भी सम्बोधित किया।

सभा में एक प्रस्ताव पास कर महंगाई, बेरोजगारी पर रोक लगाने, किसान-खेतमजदूरों के सारे कर्ज समाप्त करने, फसलों के लाभकारी दाम देने, मनरेगा में रोजगार व 600 रुपए दैनिक मजदूरी देने, मिड-डे-मील स्कीम को पंचायतों के हाथ में न देने, आवारा पशुओं पर अंकुश लगाने की मांग की गई।

शानदार जुलूस निकाला

सोनीपत (हरियाणा) : 1 अक्तूबर को महान नवम्बर क्रान्ति शब्तादी वर्ष के अवसर पर एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) सोनीपत शहर में बस अड्डे से शुरू करके रेलवे स्टेशन तक शानदार जुलूस निकाला।

एसयूसीआई(कम्युनिस्ट) की केन्द्रीय कमेटी के सदस्य सह हरियाणा राज्य सचिव कॉ. सत्यवान ने कहा कि आज से सौ साल पहले रूस के किसान मजदूरों ने महान लेनिन के नेतृत्व में पहली सफल समाजवादी क्रान्ति करके पूंजीपतियों के शासन एवं शोषण को उखाड़ फेंका था और मजदूर राज, समाजवाद कायम किया था। इसके बाद वहां महंगाई, बेरोजगारी, भुखमरी, भष्टाचार जैसी समस्याओं को मिटा दिया गया था। दूसरे विश्वयुद्ध में स्तालिन के नेतृत्व में रूस की लाल फौज ने फासिस्ट हिटलर को हरा कर मानवजाति को बचाया था। 1917 की समाजवादी क्रान्ति से प्रेरणा लेकर भारत में शहीद भगत सिंह भी साम्यवादी आदर्श के प्रति आकर्षित हुए थे और शोषणहीन समाज बनाने का सपना लेकर देश की आजादी के लिए अपनी जान कुर्बान की थी। इसी क्रान्ति से प्रभावित थे नेताजी सुभाष चन्द्र बोस, मुंशी प्रेमचंद, शरत्चन्द्र, नजरूल आदि सहित देश और दुनिया के मनीषी और क्रान्तिकारी। कॉमरेड सत्यवान ने महान नवम्बर क्रान्ति की सीख को मजदूर-किसानों सहित तमाम मेहनतकशों तक ले जाने और महंगाई, बेरोजगारी आदि तमाम समस्याओं की जननी मौजूदा पूंजीवादी व्यवस्था को उखाड़ फेंककर समाजवाद कायम करने की जरूरत पर बल दिया।

सभाध्यक्ष एसयूसीआई(कम्युनिस्ट) के सोनीपत जिला सचिव कॉ. ईश्वर सिंह राठी ने कहा कि मौजूदा शोषणकारी पूंजीवादी घोर प्रतिक्रियावादी हो गई है। पंजीपतियों की ताबेदार बुर्जुआ पार्टियां और सरकारें जनता को धर्म, जाति, क्षेत्र, भाषा आदि के आधार पर बांट कर और उन्माद पैदा करके लड़ा रही हैं। असली सवालों से ध्यान हटाने के लिए नकली सवालों को खड़ा कर रही हैं। उन्होंने पूंजीवाद-विरोधी दिशा में जोरदार आन्दोलन खड़ा करने की अपील की। सभा को एआईयूटीयूसी के हरियाणा राज्य सचिव कॉ. हरिप्रकाश ने भी सम्बोधित किया।

सरकार की मजदूर-विरोधी, जनविरोधी नीतियों के खिलाफ हरियाणा की ट्रेड यूनियनों का संयुक्त कन्वेन्शन आयोजित

रोहतक : सरकार की मजदूर-विरोधी, जनविरोधी नीतियों के खिलाफ 8 अक्तूबर को यहां रोडवेज यूनियन के सभागार में हरियाणा की ट्रेड यूनियनों का संयुक्त कन्वेन्शन आयोजित हुआ। अध्यक्षमंडल में एआईयूटीयूसी के राज्य कमेटी सदस्य कॉ. रामफल भी मौजूद थे।

एआईयूटीयूसी के हरियाणा राज्य सचिव कॉ. हरिप्रकाश ने अपने वक्तव्य में दिल्ली जंतर मंतर पर 9-10-11 नवम्बर के धरने में बढ़ चढ़ कर शामिल होने की अपील की।

8 R.N.I. No.- 43022/85
P.R.No.-DL(C)-01/1123/2015-2017
Posting at New Delhi PSO on 7–8 and 22–23 Fortnightly , Date of Publication : October 20, 2017

सर्वहारा दृष्टिकोण

22 अक्तूबर से 5 नवम्बर, 2017

बीएचयू छात्राओं पर लाठीचार्ज के खिलाफ देश भर में किये गए छात्र प्रदर्शन

नई दिल्ली : बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में छात्राओं की सुरक्षा के प्रति विश्वविद्यालय प्रशासन के गैर-जिम्मेदाराना रवैये के खिलाफ आन्दोलनरत छात्र-छात्राओं पर पुलिस के निर्मम लाठीचार्ज की गैर-लोकतांत्रिक कार्यवाही के खिलाफ 25 सितम्बर को दिल्ली के तमाम वामपंथी व जनवादी संगठनों द्वारा जंतर-मंतर पर एक विरोधा प्रदर्शन किया गया। इस प्रदर्शन में एआईएमएसएस, एआईडीएसओ और एआईडीवाईओ की दिल्ली राज्य कमेटी ने भी भाग लिया। सैंकड़ों की संख्या में छात्र, महिलाएं, युवक और अन्य तबकों से जनवाद-पसंद लोग जंतर-मंतर पर एकत्रित होकर विश्वविद्यालय प्रशासन द्वारा सरकार की मिलीभगत से किये गए इस लाठीचार्ज काण्ड की कड़े शब्दों में निंदा की। प्रदर्शन स्थल पर हुई सभा को एआईएमएसएस की दिल्ली राज्य सचिव कॉमरेड रितु कौशिक ने भी संबोधित किया। उन्होंने तमाम जनवादपसंद लोगों, खासकर छात्राओं व महिलाओं को एकजुट होकर अपनी अस्मिता की रक्षा के लिए और मौजूदा समाज की पुरुष प्रधान मानसिकता के खिलाफ जनवादी आंदोलन तेज करने की अपील की।

विदित हो कि 25 सितम्बर को एआईडीएसओ की अखिल भारतीय कमेटी की ओर से अखिल भारतीय प्रतिवाद दिवस के आह्वान के तहत संगठन की दिल्ली राज्य कमेटी इस संयुक्त प्रतिवाद सभा में शामिल रही। साथ ही 26 सितम्बर को तमाम वामपंथी छात्र संगठनों की ओर से एक प्रतिवाद जुलूस दिल्ली विश्वविद्यालय में निकाला गया। आर्ट्स फैकल्टी गेट पर एक सभा हुई जिसे एआईडीएसओ की दिल्ली राज्य सचिव कॉ. श्रेया सिंह ने संबोधित किया।

जमशेदपुर (झारखण्ड) : बीएचयू छात्राओं पर हुए लाठीचार्ज के विरोध में एआईडीएसओ, जमशेदपुर नगर कमेटी की ओर से 25 सितम्बर मानगो गोल चक्कर में योगी सरकार का पुतला दहन किया गया वाह रे योगी सरकार जहां एक और बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ का संदेश दे रही है वही अपनी सुरक्षा की मांग कर रही बेटियों पर आधी रात में लाठीचार्ज करवा रही है

छ.ग. राज्य में पूर्ण शराबबंदी लागू करने की मांग पर प्रदर्शन

दुर्ग (छत्तीसगढ़) : राज्य में पूर्ण शराबबंदी लागू करने की मांग पर 2 अक्टूबर को शराब-विरोधी संघर्ष समिति, ऑल इण्डिया महिला सांस्कृतिक संगठन (AIMSS), ऑल इण्डिया डीवाईओ (AIDYO) ऑल इण्डिया डीएसओ (AIDSO), दुर्ग (छत्तीसगढ़) की ओर से दुर्ग कलेक्टर ऑफिस पर प्रदर्शन किया गया।

मुरादाबाद (उ.प्र.) में जीएसटी के विरोध में 12 सितम्बर को एआईयूटीयूसी की पहल पर पीतल मजदूरों, दस्तकारों और छोटे दुकानदारों के मोर्चे की ओर से विरोध प्रदर्शन किया गया। प्रदर्शनकारियों ने मांग की कि पीतल उद्योग से जीएसटी हटाया जाये।

टिप्पणियां

एशिया-प्रशांत क्षेत्र में सबसे भ्रष्ट देश है भारत

भारत को एशिया-प्रशांत क्षेत्र में सबसे भ्रष्ट देश की संज्ञा दी गई है, जिसमें रिश्वतखोरी की दर 69 प्रतिशत है। बर्लिन स्थित एक गैर सरकारी संगठन ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल के एक अध्ययन का हवाला देते हुए फोर्ब्स की एक रिपोर्ट में कहा गया है कि लगभग दस लोगों में से सात लोगों को सार्वजनिक सेवाएं प्राप्त करने के लिए रिश्वत देनी पडती है। भारत में शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा क्षेत्रों में क्रमशः लगभग 58 प्रतिशत और 59 प्रतिशत रिश्वतखोरी की दर देखी गई। कई बार जब लोगों ने पुलिस द्वारा दस्तावेजों की शिनाख्त और बुनियादी सुविधाओं के लिए रिश्वत का भुगतान किया तो उसकी दर भी लगभग समान रूप से ऊंची थी, रिपोर्ट में कहा गया था। रिपोर्ट ने यह भी दिखाया है कि कैसे भ्रष्टाचार के इस खतरे से समाज के सबसे गरीब तबके सबसे अधिक प्रभावित होते हैं। भारत में दी जाने वाली रिश्वत का 73 प्रतिशत निम्न आय समूहों द्वारा अदा किसा गया था, जिन्हें अन्य विकल्पों की अनुपलब्ध ता के कारण पैसे का भुगतान करना पड़ा या रिश्वत देने से बचने के लिए कम प्रभावशाली थे। (बिजनेस इंडिया 01-09-17)

अमीर देशों के 5 बच्चों में से 1 आय की सापेक्ष गरीबी में रहता है –यूनिसेफ

यूनिसेफ ऑफिस ऑफ रिसर्च इंनोसेनटी द्वारा जारी किए गए नवीनतम रिपोर्ट कार्ड के मुताबिक, उच्च आय वाले देशों में 5 में से 1 बच्चा आय की सापेक्ष गरीबी में रहता है। उच्च आय वाले देशों में 8 में से 1 बच्चा भोजन असुरक्षा का सामना करता हैं, यह अनुपात यूनाइटेड किंगडम और संयुक्त राज्य अमेरिका में 5 में से 1 तक बढ़ जाता है।

यूनिसेफ इंनोसेनटी के निदेशक सारा कुक ने कहा, ''रिपोर्ट कार्ड 14 एक चेतावनी है कि उच्च आय वाले देशों की प्रगति में भी सभी बच्चों को फायदा नहीं होता है।'' ''उच्च आय अपने आप सभी बच्चों के लिए बेहतर परिणाम नहीं लाती, बल्कि वास्तव में असमानताओं को और गहरा कर सकती है। बच्चों के लिए एसडीजी तक पहुंचाने के लिए सभी देशों की सरकारों को खाई कम करने और प्रगति सुनिश्चित करने के लिए कार्रवाई करने की आवश्यकता है।''

अधिकांश देशों में नवजात मृत्यु दर नाटकीय रूप से घट गई है। 4 में से 1 किशोर सप्ताह में एक से अधिक बार दो या दो से अधिक मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं की रिपोर्ट करता है। यहां तक कि सबसे अच्छा प्रदर्शन करने वाले देशों में भी, 15 वर्षीय बच्चों का पांचवां हिस्सा पढ़ने, गणित और विज्ञान में न्यूनतम प्रवीणता स्तर तक नहीं पहुंचता है। आय में असमानता, किशोरावस्था में मानसिक अस्वस्थता और मोटापा ज्यादातर अमीर देशों में चिंता का कारण बना हुआ है। (यूनिसेफ प्रेस विज्ञप्ति)

Printed and published by Com. Satyawan on behalf of the Central Committee of the Socialist Unity Centre of India (Communist) and printed at M/s Balaji Offset Printers, 315/21, Shahzada Bagh, Daya Basti, Delhi and published at 3A/38, WEA, Satnagar, Karol Bagh, New Delhi-110005. Editor: Com. Satyawan, Member, Central Committee, SUCI(C)."

Email: sarvaharadrishtikon@gmail.com , sarvaharadrishtikon@yahoo.com फोन नं. : 011-25726631, 9868350503